RNI No.10742/1957

SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:57, Issue: 06
November - 2026, Price Rs.20/-,
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

नवंबर-2026

रु.20/-



शुभां हिरण्य प्राकारां समुद्रतनयां जयाम्।
नमामि मंगलां देवीं सर्वोपद्रव वारिणीम्।।









दि.15-19-2026 से
दि.23-09-2026 तक
तिरुमल में वार्षिक ब्रह्मोत्सव अत्यंत धूम-धाम से वैभव रूप में संपन्न किया। भगवान जी विविध वाहनों में आरूढ़ होकर दर्शन दिया। सुदूर प्रांतों से पधारे हुए भक्तगण इस ब्रह्मोत्सव में भाग लेकर भगवान जी का आशीश को प्राप्त लिया।













कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-४७)



तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिये तू कर्मों के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो।



अंतर्यामि अलसिति सोलसिति
इंतट नी शरणिदे चोच्चितिनि ॥अंतर्यामि॥

कोरिन कोर्कुलु कोयनि कट्लु
तिरवु नीवनि तेंचका
भारपु पग्गालु पाप पुण्यमुलु
नेरुपुल बोनीवु नीवुवद्दनका ॥अंतर्यामि॥

जनुल संगमुलन् जक्क रोगमुलु
विनु विडुववु नीवु विडिपिंचका
विनयपु दैन्यमु विडुवनि कर्ममु
चनददे नीविटुनंत परचका ॥अंतर्यामि॥

मदिलो चिंतलु मैललु मणुगुलु
वदलवु नीवनि तद्दनका
एदुटने श्रीवेंकटेश्वर नीवदे
अदनंगाचितिवि अट्टिट्टनका ॥अंतर्यामि॥

श्री वेंकटेश का चरण कमलों में अपने आपको पूर्णतया समर्पित किया गया है।

बडी दीनता तथा विनम्रता से, जीवन के प्रति अपनी निरासक्तता को प्रकट करते हुए वे कहते हैं - हे प्रभु! मैं पूरी तरह पराजित होकर तुम्हारे पास आया हूँ। अब तुम ही मेरी रक्षा करो।

इस शरीर को बाँध रखनेवाले पाप-पुण्य रूपी बंधन, अब भारी पड गये हैं। तुम्हारी आज्ञा के बिना ये दूर हटनेवाले नहीं है। ये रिस्ते-नाते, कर्म-फल, अस्वस्थता-दीनता, मैल-संस्कार - ये भी तुम्हारी आज्ञा के सिवा छूटनेवाले नहीं हैं। हे कृपालु प्रभु! तुम तो मेरे सामने ही खडे हो। अब तो तुम्हारे सिवा मुझे कुछ नहीं चाहिए। मुझे तुम्हारा आश्रय दो।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

श्रीवारि वैद्य सेवा











टी.टी.डी. ने हाल ही में 'श्रीवारि वैद्य सेवा' नामक एक नई योजना शूरू की है। जो प्रमुख चिकित्सा पेशेवरों को तिरुपति यात्रा के दौरान भगवान वेंकटेश्वर की निःशुल्क सेवा करने का अवसर प्रदान करती है।

डॉक्टर इस योजना के तहत अपना नाम पंजीकृत करवातें हैं और अपने तय सूची के अनुसार तिरुमल में स्थित अश्विनी अस्पताल और तिरुपति में स्थित स्विम्स (SVIMS) और बर्ड (BIRRD) अस्पताल, श्री पद्मावती बाल बच्चों का हृदयालया और एस.वी.आयुर्वेदिक अस्पताल एवं एस.वी.गोशाला में इलाज करा रहे बहुत सारे मरीज़ों को परामर्श और (शल्य चिकित्सा) सर्जरी की सुविधाएँ दे सकते हैं।

विशेष चिकित्सा विशेषज्ञों को तीन दिनों के स्वैच्छिक सेवा का अवसर दिया जाएगा, जबकि एम.बी.बी.एस. (MBBS) डॉक्टर सात दिनों तक सेवा कर सकते हैं। तिरुमल और तिरुपति में टी.टी.डी. के द्वारा आवास और भोजन की व्यवस्था की जाएगी।

हिन्दू धर्मावलंबी वैद्यनिपुण ऑनलाइन के द्वारा टी.टी.डी. वेबसाइट https://ttdevasthanams.ap.gov.in/srivari-seve/instructions में अपना स्लाट को बुकिंग करके इस सेवा कार्यक्रम में भाग ले सकते हैं।

पूरे भारत और कई दूसरे देशों के विशेषज्ञों भगवान वेंकटेश्वर के प्रति एक विनम्र योगदान के तौर पर इस योजना में हिस्सा लेने में दिलचस्पी दिखा रहे हैं। चिकित्सा विशेषज्ञ ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के ज़रिए क्लास ले सकते हैं और खास लेक्चर दे सकते हैं, जिससे मेडीकल स्टूडेंट्स (वैद्यकीय छात्र) को एक अनोखा मौका मिलता है।

कुछ ऐसे उदाहरण हैं जिनसे पता चलता है कि टी.टी.डी. ने गरीबों को सम्मानजनक और बेहतर जीवन जीने में किस तरह चिकित्सा और आर्थिक सहायता प्रदान की है।

टी.टी.डी. 'मानव सेवा ही माधव सेवा है' (इंसानों की सेवा ही ईश्वर की सेवा है) के नारे में दृढ़ विश्वास रखती है।

इसलिए भगवान श्री वेंकटेश्वर के आशीर्वाद के रूप में टी.टी.डी. अस्पतालों में सेवा करने के इस अवसर को ग्रहण करें और आशीर्वाद को प्राप्त करें।



सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-57 नवंबर-2026 अंक-06

विषयसूची

दीपावली : स्वच्छता और खुशहाली का त्योहार	श्री अंकुश्री	07
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	11
यम द्वितीया : एक धार्मिक पर्व (भाई दूज)	डॉ.एस.हरि	15
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	18
नाग चतुर्थी (नागुल चविति)	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	22
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	26
कार्तिक मास वैभव	श्री ज्योतीन्द्र के.अजवालिया	31
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	35
पुष्प याग (यज्ञ)	डॉ.जी.मोहन नायुडु	37
क्षीराब्धि द्वादशी	डॉ.एच.एन.गौरीराव	40
कपिलतीर्थ मुक्कोटी	श्री सी.सुधाकर रेड्डी	43
नवम्बर महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - जहाँ समझ वहाँ संगम	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - कलिपीड़ा निवारण के लिए...	डॉ.एम.आर.राजेश्वरी	50
क्विज - 52		52

website: www.tirumala.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है।
सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri_helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - देवी माँ श्री महालक्ष्मी का वर्णचित्र।

चौथा कवर पृष्ठ - भगवान श्री महाविष्णु का वर्णचित्र।

गौरव संपादक
श्री एम.रविचंद्रा, I.A.S.
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रकाशक - संपादक,
प्रधान संपादक (F.A.C.)
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम, M.A., Ph.D.,
P.G. Dip. in JMC

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा, M.A., B.Ed.

मुद्रक
श्री आर.वी.विजयकुमार, B.A., B.Ed.
उपकार्यनिर्वहणाधिकारी,
मुद्रणालय & पुस्तक बिक्री केंद्र,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, मुख्य-फोटोग्राफर, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 4359, Chief Editor - 2264363.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

संपादकीय

खेलने दें...! बढ़ने दें...!

बचपन जीवन की पहली अवस्था है। खेल-कूद, स्नेह, मित्रता और मासूमियत का पर्याय है बचपन। बचपन अत्यंत कोमल और पवित्र होता है। अलौकिक आनंदानुभूतियाँ प्रदान करने वाला, प्रकृति का दिया हुआ अनमोल वरदान है। जीवन का मधुरतम फल है बचपन। बचपन भविष्य की नींव है। यह वह अवस्था है, जब शारीरिक और मानसिक शक्तियाँ अद्भुत रूप से विकसित होती रहती हैं। कल्पनाओं और विचारों के लिए यह एक विशाल संसार है। पूरी तरह दूसरों पर निर्भर रहने की अवस्था से शुरू होकर यह धीरे-धीरे पूर्ण स्वतंत्रता की आकांक्षा करने की दिशा में आगे बढ़ता है।

इसीलिए बच्चों को खेलने देना चाहिए। बच्चे पास के किसी पार्क या किसी खेल के मैदान में जाएँ और वहाँ उनके लिए उपलब्ध खेल के साधनों से मन लगाकर खेलें और आनंद उठाएँ। जब बच्चे खेल रहे हों, तब बड़ों को उन्हें नियंत्रित नहीं करना चाहिए। सहज और स्वतंत्र रूप से खेले जाने वाले खेलों से बच्चों की स्वयं सोचने की क्षमता, कल्पनाशक्ति, निर्णय लेने की क्षमता और आत्मविश्वास में विकास दिखाई देता है। स्वतंत्र खेल बच्चों में आत्मविश्वास पैदा करते हैं। स्वच्छंद रूप से खेले जाने वाले खेल बच्चों को अपने विचारों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करते हैं। वे ज्ञान अर्जित करने पर भी ध्यान केंद्रित करते हैं। बच्चों को अपने स्वतंत्र प्रयोग करने के अवसर प्रदान करने चाहिए। उन्हें स्वयं विश्लेषण करने देना चाहिए। अपने स्तर पर मानसिक स्थिरता प्राप्त करने में भी खेल सहायक होते हैं। मन लगाकर खेले जाने वाले खेलों में किसी प्रकार की अपेक्षाएँ नहीं होतीं। वे तनाव से मुक्त होते हैं। वास्तव में प्रदर्शन के दबाव में सभी के आत्मविश्वास का स्तर कम होता जाता है। इसलिए ये खेल बिना किसी अपेक्षा और बिना किसी दबाव के सहज रूप से चलते हैं। अतिरिक्त गतिविधियों के अंतर्गत सीखने के अभ्यासों की तुलना में स्वतंत्र खेलों में आंतरिक प्रेरणा होती है। स्वतंत्र रूप से खेले जाने वाले खेलों से निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है।

बचपन खेलों का पर्याय है। बचपन वह उम्र है, जिसे खेल-कूद और आनंद के साथ खिलना चाहिए। खेलना सृष्टि के समस्त प्राणियों का सबसे स्वाभाविक गुण है। प्रकृति की गोद में पलने वाले बच्चों के खेल, प्राकृतिक परिवेश का ही एक हिस्सा होते हैं। प्रकृति में उपलब्ध हर वस्तु बच्चों के लिए खिलौना बन जाती है। झाड़ू की तीलियाँ, इमली के बीज, पत्थर, फूल, लकडी के टुकड़े, रेत, मिट्टी, पेड़ और तालाब - सब कुछ बच्चों के खेलों में शामिल हो जाता है। बच्चों द्वारा खेले जाने वाले खेल किसी जाति की सांस्कृतिक संपदा का अमूल्य हिस्सा बन जाते हैं।

बचपन में खेले गए खेल, गाए गए गीत, बनाई गई दोस्तियाँ और मिली स्वतंत्रता - ये सब बचपन की स्मृतियों में संजोए हुए मोर पंख की तरह होते हैं। उनमें चाँदनी जैसी शीतलता होती है। इसलिए बच्चों के लिए खेल बहुत महत्वपूर्ण हैं। पूरी दुनिया ही उनके लिए खेल का मैदान है! प्रकृति की हर वस्तु उनके लिए खिलौना है। खेलना, खेलते-खेलते थक जाना और फिर सो जाना-बचपन के वरदान हैं! सहज प्रवृत्तियाँ हैं। सौंदर्य हैं। इसलिए इसी दृष्टि से बच्चों को खुले मैदानों में, आराम से, स्वतंत्र रूप से, उत्साह और उल्लास के साथ, अपनी पसंद के खेल खेलने दें! उन्हें स्वस्थ रूप से बढ़ने दें!

''बाल दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।''

दीपावली : स्वच्छता और खुशहाली का त्योहार

- श्री अंकुश्री

''हरिः ॐ हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।''

दीपावली का नाम सुनते श्री लक्ष्मीजी का ध्यान आ जाता है और मन के आईने में दीपों की सजी कतारें दिखने लगती हैं। श्री लक्ष्मीजी धन की देवी हैं। इनकी आराधना से धन की प्राप्ति होती है और घर में सुख-वैभव बना रहता है। ऋग्वेद के उपर्युक्त सूक्त के पाठ से घर की दरिद्रता अर्थात् अलक्ष्मी दूर होती है और लक्ष्मी, सुख, समृद्धि, यश तथा ऐश्वर्य की स्थाई प्राप्ति होती है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार देवताओं और राक्षसों द्वारा कार्तिक अमावास्या को समुद्र-मंथन किया गया था। समुद्र-मंथन के दौरान चौदह रत्न निकले थे। उनमें श्री लक्ष्मीजी भी एक थीं। उनके एक हाथ में स्वर्ण मुद्राओं से भरा कलश और दूसरे हाथ में कमल का पुष्प था। श्री विष्णुजी ने श्री लक्ष्मीजी का वरण किया। उसी याद और खुशी में कार्तिक अमावास्या को श्री लक्ष्मीजी की पूजा की जाती है और दीप जलाकर दीपावली मनाई जाती है। श्री लक्ष्मीजी श्री, सौभाग्य, धन-संपत्ति, समृद्धि, संपन्नता आदि की देवी हैं। दीपावली की रात श्री लक्ष्मीजी स्वर्ग से उतर कर धरती पर भ्रमण करती हैं और स्वच्छ, आलस रहित तथा प्रकाश-आलोकित घरों में प्रवेश करती हैं। जिन घरों में प्रेम, शांति और सौहार्द्र दिखाई देता है, वहाँ वे वास कर जाती हैं।

दीपावली मनाए जाने के संबंध में अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। लंका-विजय के उपरांत भगवान श्रीरामजी कार्तिक अमावास्या के दिन ही वनवास काट कर





अयोध्या वापस आए थे। अयोध्यावासियों ने उनके स्वागत में पूरी अयोध्या को दीपों से सजाया था और खुशियाँ मनाई थीं। उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाण, पंजाब और दिल्ली में उस दिन की याद में साफ-सफाई करके दीपावली मनाई जाती है और दीपों से घर-आंगण सजाया जाता है।

श्रीकृष्ण ने दीपावली से एक दिन पूर्व चतुर्दशी तिथि को नरकासुर का वध किया था। कर्णाटक में श्रीकृष्ण द्वारा नरकासुर के वध और राजा बली की कथा से दिवाली का त्योहार जुड़ा हुआ है। वहाँ त्रयोदशी के दिन घर और उसे आस-पास की सफाई के साथ ही घर के पीतल और तांबा के बर्तनों की भी सफाई की जाती है। इससे घर की सारी गंदगी नकारात्मक ऊर्जा समाप्त हो जाती है। साफ-सुथरे बर्तनों को सजा कर उनमें जल भर दिया जाता है। नरक चतुर्दशी के दिन सूर्योदय से पूर्व शरीर में सरसों का तेल मालिश कर उसी जल से पवित्र स्नान किया जाता है। इसे अभ्यंग स्नान कहा जाता है। देश में कई जगह नरक चतुर्दशी की रात घर के पिछवाड़े या नाली के पास एक पुराना दीपक का मुँह दक्षिण दिशा की ओर करके जलाया जाता है।

दीपावली की रात सबसे पहले श्रीगणेशजी का ''ॐ गं गणपतये नमः'' मंत्र से पूजन किया जाता है। उसके उपरांत माता श्री लक्ष्मीजी का पूजन करके दीप प्रज्वलित किया जाता है। श्री लक्ष्मीजी का मंत्र जाप कमलगट्टे की माला से किया जाता है। जाप का एक मंत्र है - ''ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्मी नमः।'' श्री लक्ष्मीजी का शक्तिशाली मूल मंत्र है - ''ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।'' धन, वैभव और समृद्धि का महामंत्र है - ''ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्री सिद्ध लक्ष्म्यै नमः।'' श्री लक्ष्मीजी कमल के फूल पर विराजमान रहती हैं। इन्हें कमलगट्टा (कमल का बीज), मखाना और सफेद खीर पसंद है। इन्हें गुलाबी, लाल और पीले रंग का फूल चढ़ाया जाता है। घर में शंख और कौड़ी रखने से श्री लक्ष्मीजी का वास बना रहता है। श्री लक्ष्मीजी के आठ रूप वर्णित हैं - आदि लक्ष्मी, धन लक्ष्मी, धान्य लक्ष्मी, गज लक्ष्मी, संतान लक्ष्मी, वीर लक्ष्मी, विजय लक्ष्मी और विद्या लक्ष्मी। इन सारे रूपों में श्री लक्ष्मीजी हमारे जीवन में अलग-अलग ढंग से शांति और समृद्धि प्रदान करती हैं। जिन घरों में दान-पुण्य के साथ ही शांति का वातावरण रहता है और बड़ों को उचित सम्मान दिया जाता है, उन घरों में श्री लक्ष्मीजी का बास बना रहता है।

श्री विष्णुजी के अवतारों के साथ श्री लक्ष्मीजी के भी अवतार होते रहे हैं। श्रीराम अवतार में श्री सीता माता, श्रीकृष्ण अवतार में श्री रुक्मिणी जी और श्री राधा जी, श्री वेंकटेश्वर स्वामी अवतार में श्री पद्मावतीजी के अवतार हो चुके हैं। श्री लक्ष्मीजी का शुभ अंक 6(छह) है, जो धन, वैभव और सौंदर्य के ग्रह शुक्र से भी संबंधित है। घर में श्री लक्ष्मीजी के आगमन का संकेत पूर्व में ही मिलने लगता है। रुके हुए काम पूरे होने लगते हैं और घर में सकारात्मक ऊर्जा बढ़ कर शांति आ जाती है। धन से जुड़ी परेशानियों और कर्ज में कमी आने लगती है। मन शांत और खुश रहने लगता है तथा

सात्विक भोजन के प्रति रुचि बढ़ जाती है। घर में शंख बजना शुरू हो जाता है। इत्र या धूपबत्ती का प्रयोग किए बिना घर में सुगंध का अनुभव होने लगता है। साथ ही दीये की लौ अचानक बड़ी और तेज होने लगती है। घर में गौरेया आदि शुभ पक्षियों का कलरव सुनाई देने लगता है।

दीपावली पूरे भारत में बड़े धूमधाम से मनाई जाती है। यह त्योहार अंधकार पर प्रकाश की, असत्य पर सत्य की और मृत्यु पर अमरत्व की जीत का प्रतीक है। इस पूरे देश में भिन्न-भिन्न कारणों से और अनेक रूपों में मनाया जाता है। एक बात प्रमुख है कि दीपावली मनाने के लिए घर-बाहर की अच्छी तरह सफाई हो जाती है। गंदगी ही नरक अर्थात् नरकासुर है, जिसे हटा दिया जाता है।

गुजरात में दीपावली के दिन घर-दरवाजों को विशेष रूप से सजाया जाता है। महिलाएँ रंगीन चावल या उसके चूर्ण और तरह-तरह के फूलों से आँगन में अल्पना बनाती हैं। वे घर की दीवारों पर सिंह का चित्र अंकित करती हैं, दीप जलाती हैं और घर में मिठाइयाँ बांटती हैं। महाराष्ट्र में दीपावली के दिन घर-दरवाजे साफ करके उसे रंग रोगन करके सजाया जाता है। उस दिन वहाँ श्री लक्ष्मीजी की पूजा की जाती है, साथ में बली की भी पूजा की जाती है।

घरों में खाने-पीने की चीजें प्रायः बिल्ली से बचा कर रखी जाती हैं। मगर इसके विपरीत राजस्थान में दीपावली के दिन तरह-तरह के व्यंजनों का भोग लगाकर रख दिया जाता है, जिसे बिल्ली झूठा कर देती है तो शुभ माना जाता है। माना जाता है कि पूरे साल घर में धन-धान्य की कमी नहीं होगी। किसी भी पर्व त्योहार का मान्यताओं के साथ गहरा संबंध है।

चत्तीसगढ़ में दीपावली को सफाई, ज्योति और धन का पर्व माना जाता है। कुछ दिन पहले से ही घर और आस-पास की सफाई होने लगती है। दीपावली की रात खूब प्रकाश किया जाता है। महिलाएँ श्री लक्ष्मीजी की मूर्ति बना कर उसका पूजन करती हैं और घर के सारे आभूषण उस मूर्ति के समक्ष रख देती हैं। घर में मिठाइयाँ बांटी जाती हैं। हैदराबाद में विशेष कर यादवों द्वारा दीपावली के दिन भैंसों को नहला-धो कर उनके सींगों को रंगा जाता है और सड़कों पर उन्हें चलाया जाता है। उस दौरान लोग ड्रम की थाप पर रास्ते में नाचते हुए चलते हैं। इसे देखने के लिए लोगों की भीड़ जुट जाती है।

असम, बंगाल, बिहार और उड़ीसा में दीपावली के दिन श्री लक्ष्मीजी और काली की पूजा की जाती है। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार जब महाकाली असुरों का संहार कर रही थीं तो उत्तेजित होकर वे मनुष्यों का भी संहार करने लगीं। इससे लोगों में त्राहि-त्राहि मच गई। तब भगवान शंकर उत्तेजित महाकाली के रास्ते में आ गए। उनके तपोमय शरीर का स्पर्श होते महाकाली का सारा क्रोध शांत हो



गया और संसार का संहार बच गया। तभी से काली के संहारक रूप से मुक्ति पाने की खुशी में लोग माँ की पूजा करते आ रहे हैं। उस दिन घर-घर में दीप भी जलाएँ जाते हैं।

उत्तराखंड में मान्यता है कि दीपावली की रात पूर्वजों की आत्माएँ धरती पर आकर उत्सव में शामिल होती हैं। उस दिन वहाँ गायों की पूजा की जाती है। पहाड़ी क्षेत्रों के निचले हिस्से में महीने भर प्रकाश पर्व मनाया जाता है और दीपावली के दिन विशेष पर्व मनाया जाता है। मध्य प्रदेश में उज्जैन के राजा विक्रमादित्य ने कार्तिक मास के 16वें दिन ताज ग्रहण किया था और दीपावली के दिन से नया विक्रम संवत् चलाया था। यह बात ई. पूर्व 85 की है। इसलिए विक्रम संवत् के नववर्ष के रूप में वहाँ प्रति वर्ष दीपावली मनाई जाती है।

दीपावली के शुभ दिन के साथ अनेक महान् आत्माओं का संबंध जुड़ा हुआ है। स्वामी रामतीर्थ परमहंस का जन्म दीपावली के दिन हुआ था। उन्हें दीपावली के दिन ही ज्ञान भी प्राप्त हुआ था। इतना ही नहीं, उन्होंने दीपावली के दिन ही अपना शरीर भी त्याग था। जैन धर्म के तीर्थंकर महावीर और आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानंद सरस्वती का निर्वाण दीपावली के दिन ही हुआ था।

बरसात में घर-बाहर कीड़े-मकोडों का अक्षुण्ण राज्य को जाता है। दीपावली की रात घोर अंधकार में तेल के दीये जलाए जाते हैं। दीये की रोशनी से कीट-पतंगे आकर्षित होकर आते हैं और लौ की गर्मी से जल कर या तेल में गिर कर मर जाते हैं। इससे कीड़े-मकोड़ों से मुक्ति मिल जाती है। हालांकि रोशनी के लिए अब तेल वाले पारंपरिक दीये की जगह मोमबत्तियों और बिजली से जलने वाले टुन्नी बल्बों का उपयोग अधिक किया जाने लगा है। खास कर शहरों में दीपावली की रात तेल वाले दीये कम और बिजली के बल्ब अधिक दिखाई देते हैं। अनेक गाँवों में आज भी दीपावली के अवसर पर सरसो तेल, करंज तेल या घी के दीये जलाएँ जाते हैं। पहले तीस (अलसी) तेल से भी दीये जलाएँ जाते थें।

दीपावली के पीछे ऐतिहासिक कारणों में चाहे जो भी विभिन्नताएँ हों, लेकिन लगभग हर जगह कुछ बातों में समानता दिखाई देती है। सभी जगह घर-दरवाजे की सफाई-सफेदी की जाती है और घर को सजाया जाता है। उस दिन मिठाइयाँ खाई-खिलाई जाती हैं। बच्चे घरौंदा बना कर गुड्डा-गुड्डी का खेल खेलते हैं अैर खील-बतासे खाते तथा बांटते हैं। पटाखों और फूलझड़ियों का धड़ाम-धुडूम और चट्टाख-पट्टाख चारों तरफ सुनाई-दिखाई देता है। दीपावली की रात में सभी अपने घर-दरवाजों को दीपों से सजाते हैं। फूलझड़ियों और पटाखों की चकाचैंध और धड़ामधुडूम से आँखें चैंधिया जाती हैं और कान फटने लगते हैं। यहाँ एक बात ध्यान देने की है। यदि सीमित मात्रा में पटाखों और फूलझड़ियों का प्रयोग किया जाए तो उत्सव भी मन जाएगा और हमारा पर्यावरण भी प्रदूषित होने से बच जाएगा।

रोशनी की जगमगहट और खुशहाली के बीच दीपावली के दिन मरणासन्न व्यक्ति के चेहरे पर भी मुस्कान बिखर आती है। गंदगी दूर कर प्रकाश का साम्राज्य स्थापित करने वाले दीपावली का त्योहार है ही ऐसा कि रोता हुआ आदमी भी अपना दुःख भूल कर हँस देता है, जैसे फूलझड़ियों से सितारे बरस रहे हों, ठीक दीपावली की तरह। देखदेखी में आजकल विदेश से तैयार किये दीये का प्रयोग होने लगा है। यह उचित नहीं है। हमें दीपावली में देशी माटी के दीये जलाने चाहिए, विदेश तैयार दीये नहीं। इससे लघु उद्यमियों के घरों में भी दीये जल सकेंगे और उनके बच्चे भी फूलझड़ियाँ जला कर तथा खील-बतासों का स्वाद लेकर अपने चेहरे पर मुस्कान बिखेर सकेंगे।



श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

षष्ठाश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

वीर लक्ष्मी विलास

इष्ट देवता स्तुति

तरिगोंडा शेषकुधराध्यक्ष :

श्रीमत्कोमल नीलतोयद निभं!, श्रृंगार पूर्णेक्षणं, हेमाभांबर दिव्य भूषणम, हेलावती खेलनम, कौमारीश्वर सन्नुतांघ्री कमलं, कल्याण लीलागुणोद्धामं, श्री तरिगोंडा शेषकुधराध्यक्ष, भजेहम सदा।

श्रीमद्गुरुवर! शुभकर! श्री मन्नरसिंहदेव! चिन्मियभावा! श्री महिलाधिपा! घनतर! श्रीमद्वेंकटगिरीश! जितदनुजेशा!

कवयित्री की विनति :

इस रूप में गुरु और देव का स्मरण करते हुए वेंकटाद्री की महिमा को धरती पर प्राप्त वराहा, भविष्योत्तर पुराणों के अंशों को, तैंतालीस अध्यायों में पद्य काव्य के रूप में कुल पाँच आश्वासों में मैं ने रचा है। इस काव्य को हरि को ही समर्पित किया है। बाद में पद्म पुराण में वेंकटाद्रि विभ के द्वारा सिरि को लेकर किए तप के चरित के बारे में कुछ अंश प्राप्त होने पर, उन को ग्रहण करके उन्हें छठे आश्वास में देते हुए कुछ नयी कल्पनाएँ भी मुझे करनी पडी हैं। इसलिए अब एक रीति में मैं इस कृति को प्रस्तुत करती हूँ। इस में गलतियों को निकाल कर बुजुर्ग लोग मुझे गलत न समझे इसलिए मैं बुजुर्गों से विनति करती हूँ। उन की सेवा मैं सदा अपने चित्त में ही करती हूँ।

इस कृति के लिए अभिदान क्या है? इस का नाम श्रीकर रूप में 'वीर लक्ष्मी' उचित है। बुजुर्गों की अनुमति से ही इस नाम का मैं ने चयन किया है। इस के लिए विद्वज्ञ मुझे क्षमा करे। भारती को जिह्वा पर धारण करके नारसिंह जिस रूप में मुझ से कहलवाते हैं उस रूप में मैं लिखती हूँ। भागवत और विद्वान मेरी बाल भाषा को बिना गलतियाँ गिने स्नेह से सुनिए!

कथा का आरंभ :

इस कथा का आरंभ ऐसा है कि भविष्योत्तर पुराण में वर्णित श्रीनिवास के चरित को सुन कर शौनकादि मुनियों ने एक दिन प्रातःकाल स्नान, संध्यादि

अनुष्ठान पूरा करने के बाद सूत को देखकर इस रूप में कहा।

शौनकादि के प्रश्न :

''हे सूत! श्री श्रीनिवास के चरितों को जितना भी सुने मन तृप्त नहीं होता है। इसलिए उन से संबंधित कथाओं को क्रम से हमें सुनाइए! मनुष्य के वेश में रमापति ने प्रेम से पद्मावती के साथ विवाह करने के बाद लक्ष्मी हरि के वक्ष पर न रहकर रूठ कर कोल्हापुर जाने के बाद हरि ने लक्ष्मी का स्मरण किया या निर्दय होकर उसे भूल गए? आकाश राज की पुत्री के साथ रहते हुए लक्ष्मी को भूल कर वे सुखी रहे? फिर लक्ष्मी हरि के वक्ष पर लौट कर आयी या नहीं? हमें स्पष्ट रूप से बताइए।'' इस रूप में उनके पूछने पर सुन कर हँसते हुए वेद व्यास का स्मरण करके सूत ने इस रूप में कहा। हे मुनिगण! हरि के चरित के बारे में सुनिए।

सूत का समाधान :

जैसे आप ने मुझ से पूछा वैसे ही देवल ने देवदर्शन से पूछा था। तब महान देवदर्शन ने उसे बताया था। वह ऐसा है कि ''हे देवल सुनो! श्री विष्णु वेंकटेश्वर के रूप में पद्मावती के साथ ही रहे। किंतु दया से रमादेवी को ही अपने मन में रखते हुए, उस के रूप लावण्य को सदा याद करते हुए वेंकटाचल पर सर्व भोगों को भोगने लगे।''

वेंकटेश्वर के द्वारा पद्मावती से अपनी चिंता के बारे में बताना :

पद्मावती के साथ वेंकटेश्वर सुखी जीवन बिताने लगे थे। इस रूप में कुछ दशकों के बीत जाने के बाद श्रीनिवास ने अपने मन में इस रूप में सोचा। ''सिरि से अलग होकर मानव बन कर इतने वर्ष बिताते रहे। अब उससे अलग रहना संभव नहीं है। उसे फिर से वक्ष पर धारण कर लेना चाहिए। किसी भी रीति में प्रार्थना करके स्नेह से उसे यहाँ पर लाना चाहिए। ऐसा नहीं कर पाऊँगा तो मेरे सारे कार्य नहीं होंगे। कीर्ति भी नहीं मिलेगी। कुबेर से लिये उधार को भी चुकाने का उपाय भी मन में नहीं आयेगा।'' ऐसा सोचते सदा मन में चिंता करते हरि आर्ति बन कर मनुष्य के रूप में विरक्त होते रहे। सब कुछ भूल कर अपने आप में लीन रहते, पद्मावती के मंदिर के सारे भोगों के बारे में भी मन में ही नहीं लाते थे। तब पद्मावती हरि सर्व वैराग्य की इस दशा को देखकर भयभीत हो गयी। एक दिन एकांत के समय हरि से इस रूप में पद्मावती ने कहा। ''श्री स्वामी! अब आप के चेहरे में एक चिंता दिखाई पड रही है। जो आप के मन में है। इस समय आप के मन में ऐसी चिंता क्यों है? उस का क्या कारण है? छिपाये बिना बताइए।'' कहते हुए हरि के चरणों पर सर रखकर बिना छोडे अनेक प्रकार से उन्होंने विनति की। इस रूप में बहुत बार विनति करने के बाद सति को अपने हाथों से ऊपर उठाकर हित के साथ पुचकारते हुए पद्मावती को आलिंगन करके अन्योन्य प्रेम के साथ श्रीनिवास ने पद्मावती की ओर देखते हुए इस रूप में कहा।

''सुनो हे पद्मावती! विवरण के साथ तुम को बताऊँगा। जब सृष्टि नहीं हुई थी। तब मैं अकेला निर्विकार निर्गुण ब्रह्म के रूप में रहा। अनादि से मुझ में, अलग हुए बिना मूल प्रधान बन कर, मायाभिधान पाकर, चिद्रूप बन कर लक्ष्मी सद्रूपवाले मुझे प्राप्त करने से बहुत आनंद हुआ था। बाद में महदादि तत्व सब पैदा हुए। उन के सम्मेलन से क्रम से सृष्टि हुई। वह सृष्टि पूरे जगत में फैल गयी। तब मैं उस पूरे जगत का कर्ता बन गया। तब मैं ने ब्रह्मादि को पैदा किया। यह पूरा जगत मुझ में लीन रहता है। हे मृगाक्षी! यह पूरा जगत मुझ में ही दीपित होता रहता है। यह पूरा महत्व मुझे उस श्रीकांता के कारण प्राप्त हुआ है। अब ऐसी लक्ष्मी से अलग होने से मुझे बडी चिंता सता रही है। अद्वय ब्रह्म के रूप में,

निराकार बन कर, अचल होकर रहनेवाले मुझे महान सुंदर आकार दिया है। मेरे साथ-साथ सुंदरांगी बन कर वह रही। साथ ही गुरुतर कल्याण गुण मुझे दिया। मुझे इस रूप में महान बनाया। उस दिन से चंद्र में रहनेवाली चांदनी के रूप में व्यवहार करते हुए लक्ष्मी मेरे साथ ही रही है। इस रूप में आनंद से रहते समय एक दिन भृगु ने आकर सिरि के रहनेवाले वक्ष पर पैर से मारा। इससे लक्ष्मी मुझ से रूठ कर मुझे तिरस्कार करके करवीरपुर चली गयी। मेरी सारी सर्वज्ञता तब लक्ष्मी के साथ चली गयी। मैं वैकुंठ से निकल कर मार्ग खोकर इस गिरि पर दीन बन कर यहाँ पर रहा। नीरसता से तिंत्रिणी वृक्ष के नीचे वल्मीक में दुबक कर रहा। सर्वज्ञता को खोने के कारण मैं वैसे ही पडा रहा। एक दिन एक ग्वाले ने मुझे मारा। तब चोट लगी। तुम को देखकर मोहित हो गया। तुम ने अपनी सखियों के द्वारा मुझ पर पथराव करवाया। सिरि के न होने से ही मुझ में विवाहेक्षा हुई। इसलिए कुबेर से उधार लेकर विवाह करना पडा। हे वनिता! तुम्हारे पिता और भाई के द्वारा दिए गए धन से यह उधार नहीं चुका पाऊँगा। अब मैं क्या करूँ? यह सोचते मुझे चिंता हो रही है। हे मीन नयना! मेरे चित्त में यही चिंता है।'' हरि की इन बातों को सुन कर पद्मावती ने इस रूप में कहा।

''हे महा स्वामी! आप को उपाय बताने के लिए मेरे पास इतना विवेक कहाँ? इस रूप में मुझ से उपाय मांगना क्या न्याय है? सृष्टि के आरंभ से ही आप के साथ रहते आप को इतना महान बनानेवाली लक्ष्मी को इस रूप में अलग करना ठीक नहीं है। इसलिए किसी भी रूप में उसे मनाकर यहाँ ले आकर मेरे साथ आप के साथ उसे रखिए। तब मैं दासी बन कर आप दोनों की सेवा करती रहूँगी। इससे बढकर मेरे मन में और कोई विचार नहीं है। हे इंदिरेश! और कोई विचार भी नहीं आयेगा। शीघ्र हम दोनों कोल्हापुर जाकर लक्ष्मी के मन में रहनेवाले गुस्से को शांत करके दोनों उन्हें यहाँ ले आयेंगे।'' पद्मावती की इन बातों को सुन कर श्रीधर ने इस रूप में कहा। ''सुनो पद्मावती! मेरे साथ तुम अकेली दांपत्य जीवन जीते हुए एक पल भी मुझ से अलग हुए बिना सदा मेरा साथ रही हो। अगर लक्ष्मी आकर मेरे वक्ष पर रहने से तब तुम उसे देखकर सहन कर सकती हो? मन में चिंता किए बिना रह सकती हो? विवाह के बाद तुम मेरे साथ आयी हो। लक्ष्मी जब आयी थी वह मेरे वक्ष पर थी। इसलिए तुम्हें दुःख न हो, उसे यहाँ से मैं ने जानबूझकर ही जाने दिया है।''

पद्मावती की ललितोक्ति :

हरि के इस रूप मे कहते सुन कर चिंता करते हुए पद्मावती ने कहा। ''रमा भामा! जब यहाँ आयी थी। आपने उन्हें अपने वक्षःस्थल पर धारण करने से मुझे क्या कमी हुई है? उस लक्ष्मी ने तुझे और मुझे हित पहुँचाकर सब कुछ किया। सारे कार्यों का कर्ता बन कर रही। उस रमा कांता ने ही आत्मीयता के साथ सीता के रूप में मेरे साथ विवाह करने की बात कही थी। उन के

दिसंबर 2026 महीने का पर्व

06. श्री धन्वन्तरी जयंती
06 से 14 तक तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का ब्रह्मोत्सव
09. तिरुमल श्री बालाजी के उपस्थिति में अध्ययनोत्सव आरंभ
10. तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का गजवाहन सेवा
14. पंचमीतीर्थ
15. सुब्रह्मण्य षष्ठी
16. धनुर्मास आरंभ
20. वैकुंठएकादशी, श्री गीताजयंती
21. श्री स्वामिपुष्करिणी तीर्थ मुक्कोटी
23. श्री दत्तजयंती
25. तिरुमल श्रीहरि के उपस्थिति में संपन्न प्रणयकलह महोत्सव

कहने के बाद ही मुझे आपने वेदवती के रूप में समझाकर मेरे साथ विवाह किया। मुझ पर इतनी कृपा करनेवाली उस सिरि का मैं क्या प्रत्युपकार कर सकती हूँ? किसी भी रूप में उसे यहाँ पर प्रेम से बुलाने से ही हे कमल दलाक्ष! मैं उस रमामणि के चरणों को पकड कर उस की पूजा करती रहूँगी। मुझे कोल्हापुर ले जाइए। वहाँ मैं नाना प्रकार से लक्ष्मी से विनति करके अपने सर्वस्व को उन्हें समर्पित करके, उन्हें बुलाकर यहाँ पर ले आऊँगी।'' कहनेवाली पद्मावती को देखकर हँसते हुए संतोष के साथ श्रीनिवास ने इस रूप में कहा। ''हे सति! तुम्हारी ललितोक्ति से मुझे संतोष हुआ है। तुम वकुला मालिका के पास हित से रहो। मैं अब अति शीघ्र ही लक्ष्मी को यहाँ ले आऊँगा।'' कहते श्रीनिवास ने निर्णय किया। इस वृत्तांत के बारे में जान कर लक्ष्मी ने अपने आप में इस रूप में सोचा।

लक्ष्मी का पाताल लोक जाना :

'श्री वेंकटेश्वर आश्रित जनों की रक्षा करनेवाले अब मुझे यहाँ पर रहने नहीं देंगे। मुझे शेषाचल पर ले जाने के लिए यहाँ पर आयेंगे। तब 'मैं नहीं आऊँगी' कहने केलिए मेरा मन नहीं करेगा। मेरी जीभ से ऐसी बात नहीं निकलेगी। इसलिए गौरव के साथ मुझे कहीं छिप जाना चाहिए। अगर मैं उस देव के वक्ष पर दिन और रात को रहने से पद्मावती को चिंता होगी। मुझे यह कर्म क्यों करना चाहिए?' इस रूप में सोचते वह शीघ्र ही उठकर कोल्हापुर को छोड कर मार्ग खोकर पाताल लोक पहुँच गयी। हरि के अंशवाले विशेष योग महिमा रखनेवाले कपिल मुनि के यहाँ पहुँच गयी। तब उस लक्ष्मी को पहचान कर कपिल मुनींद्र ने बहुत गौरव के साथ बिना किसी संशय के अपने आश्रम में रहने के लिए आश्रय दिया। हरि अंश के मुनि पर बिना किसी संदेह के लक्ष्मी वहाँ पर स्थिर रूप से रहने लगी। मन में हरि को स्थापित करके पूजा करने लगी। क्रमशः

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

1. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।
2. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।
3. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए 3 महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।
4. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'
5. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।
6. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।
7. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र).

यम द्वितीया : एक धार्मिक पर्व
(भाई दूज)

- डॉ.एस.हरि

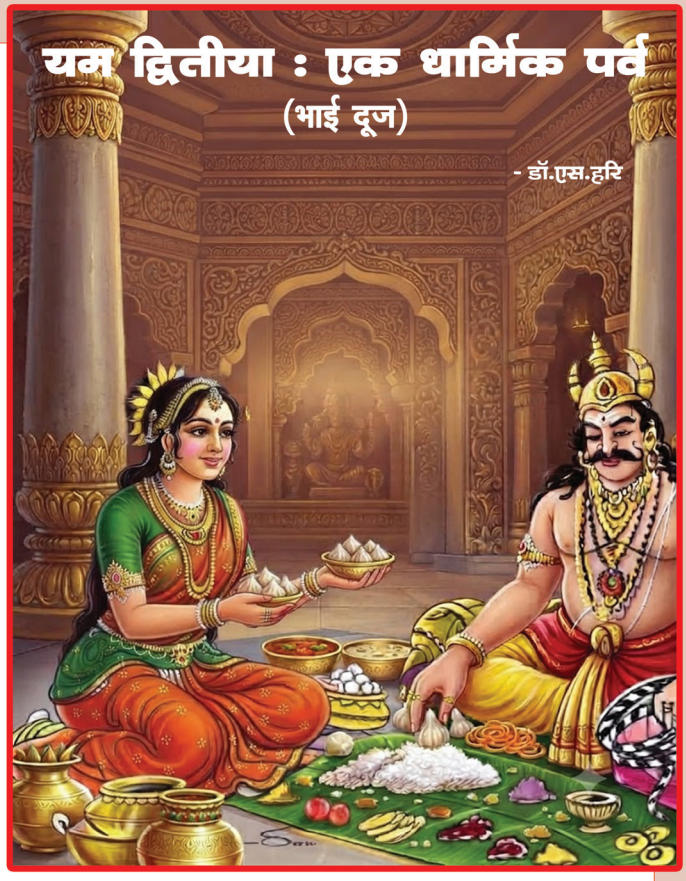

भारत त्योहारों और उत्सवों का देश है। यहाँ मनाए जाने वाले प्रत्येक त्योहार के पीछे कोई-न-कोई धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक भावना जुड़ी रहती है। इन्हीं त्योहारों में 'यम द्वितीया' का भी अपना विशेष धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व है। यह पर्व भाई-बहन के पवित्र प्रेम, स्नेह और आपसी विश्वास का प्रतीक माना जाता है। इसे देश के विभिन्न भागों में अलग-अलग नामों और परंपराओं के साथ मनाया जाता है। सामान्य रूप से इसे 'भाई दूज' के नाम से भी जाना जाता है।

यम द्वितीया कार्तिक मास के शुकल पक्ष की द्वितीया तिथि को मनाई जाती है। यह दीपावली के ठीक दो दिन के आता है। इस दिन बहनें अपने भाईयों के माथे पर तिलक लगाकर उनकी सुख-समृद्धि, स्वास्थ्य और दीर्घायु की कामता करती है। भाई भी अपनी बहन के प्रति प्रेम और सम्मान व्यक्त करते हुए उसे उपहार देता है। इस प्रकार यह पर्व भाई-बहन के संबंधों को और अधिक मजबूत बनाने का अवसर प्रदान करता है।

पौराणिक कथा और महत्व :

यम द्वितीया त्योहार के संबंध में एक प्रसिद्ध पौराणिक कथा प्रचलित है। सूर्यदेव और उनकी पत्नी संज्ञा की संतान के रूप में यमराज और यमुना का जन्म हुआ। यमराज मृत्यु और धर्म के देवता माने जाते हैं, जब कि यमुना एक पवित्र नदी के रूप में पूजनीय है।

कहा जाता है कि यमुना अपने भाई यमराज से बहुत प्रेम करती थीं और उन्हें बार-बार अपने घर आने का निमंत्रण देती थी। किंतु यमराज अपनी व्यस्तता के कारण जा नहीं पाते थे। एक दिन यमराज अचानक अपनी बहन यमुना के घर पहुँचे। यमुना ने बड़ी खुशी और श्रद्धा से उनका स्वागत किया। उन्होंने अपने भाई को आदर-सत्कार किया। और माथे पर मंगल तिलक लगाकर प्रेमपूर्वक भोजन कराया। बहन के इस अपूर्व प्रेम, स्नेह और आतिथ्य से यमराज ने बहुत प्रसन्न होकर यमुना से वरदान माँगने को कहा।

यमुना ने वरदान माँगा कि प्रत्येक वर्ष इस दिन भाई अपनी बहन के घर आए और बहन के हाथ से भोजन करें। साथ ही उन्होंने अपने भाई के कल्याण की कामना की। इसी पौराणिक प्रसंग के कारण इस दिन को 'यम द्वितीया' कहा जाता है। आज भी पूरे उत्तर भारत में यह परंपरा बड़ी निष्ठा से निभाई जाती है।

धार्मिक महत्व :

हिंदू धर्म में यमराज को केवल मृत्यु के देवता के रूप में नहीं, बल्कि धर्म और न्याय के देवता के रूप में

माना जाता है। वे मनुष्य के कर्मों के अनुसार न्याय करनेवाले देवता माने जाते हैं। इसलिए यम द्वितीया का पर्व हमें अपने कर्मों को शुद्ध और सदाचारी रखने का संदेश भी देता है। यह पर्व हमें धार्मिक आस्था के साथ-साथ प्रेम, सम्मान और पारिवारिक संबंधों को निभाने का संदेश देता है।

सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व :

भाई दूज का यह पर्व केवल एक धार्मिक अनुष्ठान ही नहीं है, बल्कि इसका सामाजिक महत्व भी बहुत अधिक है, यह पर्व परिवार के सदस्यों को एक दूसरे के निकट लाते है। उनके संबंधों को स्थाई और मजबूत बनाने मदद करता है।

यह भारतीय संस्कृति में रिश्तों और पारिवारिक मूल्यों को बनाए रखने में योगदान देता है। इस प्रकार यम द्वितीया यह भी प्रेरणा देती है कि हमें अपने पारिवारिक सदस्यों के साथ प्रेम और सम्मान का व्यवहार करना चाहिए। केवल त्योहार के दिन ही नहीं, बल्कि इन संबंधों को पूरे जीवन में महत्व देना चाहिए।

यम द्वितीया की पूजा विधि :

यम द्वितीया के दिन भाई-बहन प्रातःस्नान कर स्वच्छ वस्त्र पहनते हैं। बहन पूजा की थाली सजाकर भाई को तिलक लगाती है और उसकी उतारकर उसके सुख, स्वास्थ्य और दीर्घायु की कामना करती है।

भाई अपनी बहन को उपहार देकर उसकी सुख-समृद्धि की कामना करता है। इस दिन यमराज और यमुना जी का स्मरण एवं पूजन भी किया जाता है। अंत में भाई-बहन एक दूसरे को मिठाई खिलाकर प्रेम और स्नेह व्यक्त करते हैं।

भाई-बहन के संबंध का प्रतीक

भाई दूज का सबसे महत्वपूर्ण संदेश भाई-बहन के पवित्र संबंध की रक्षा और सम्मान है। भारतीय पारिवारिक व्यवस्था में भाई-बहन का रिश्ता अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। बचपन से लेकर जीवन के विभिन्न पहलुओं तक दोनों एक दूसरे के सुख-दुःख में साथ खडे रहते हैं समय के साथ पढ़ाई, नौकरी, विवाह और अन्य कारणों से दोनों अलग स्थानों पर रहने लगते हैं।

इससे मिलने-जुलने के अवसर कम हो जाते हैं। ऐसे भाई-बहनों को यह पर्व फिर से एक-दूसरे करीब लाने का अवसर प्रदान करता है। इस दिन वे अपने बचपन की यादों को साझा करते हैं और अपने संबंधों में प्रेम तथा आत्मीयता को बनाए रखने का संकल्प लेते हैं।

आधुनिक जीवन में भाई दूज की आवश्यकता :

आज का जीवन बहुत तेज और व्यस्त हो गया है। शिक्षा, नौकरी, व्यवसाय और अन्य जिम्मेदारियों के कारण परिवार के सदस्यों के पास एक-दूसरे केलिए समय का अभाव पाया जाता है। बहुत-से भाई-बहन अलग-अलग शहरों या देशों में रहते हैं। तकनीक के अनुसार दूर रहने वाले लोगों को बातचीत का अवसर दिया है, लेकिन प्रत्यक्ष मुलाकात और साथ बिताए समय का अपना अलग महत्व होता है।

ऐसा समय में यम द्वितीया हमें याद दिलता है कि रिश्तों को केवल संदेशों और फोन कॉल तक सीमित नहीं रखना चाहिए। हमें अपने परिवार और प्रियजनों के लिए समय निकालना चाहिए।

नई पीढ़ी के लिए संदेश :

नई पीढ़ी आधुनिक शिक्षा और तकनीक से जुड़ी हुई है। उसे अपनी संस्कृति और परंपराओं के मूल भाव

को समझना आवश्यक है। यम द्वितीया नई पीढ़ी को परिवार, रिश्तों, प्रेम, सम्मान और जिम्मेदारी जैसी मूल्यों से जोड़ सकता है।

बच्चों को यह समझाया जाना चाहिए कि त्योहार केवल नए कपड़े पहनने और मिठाई खाने के अवसर नहीं है। इनके पीछे सामाजिक और मूल्य भी छिपे होते हैं।

निष्कर्ष :

यम द्वितीया भारतीय संस्कृति का सुंदर एवं भावपूर्ण पर्व है। इसकी पौराणिक कथा में भाई यमराज और बहिन यमुना के पवित्र प्रेम का वर्णन मिलता है। यह पर्व भाई-बहन के संबंधों में प्रेम, विश्वास, सम्मान और मंगलकामना को मजबूत करता है।

आज के बदलते और व्यस्त जीवन में इस पर्व की प्रासंगिकता और आवश्यकता और भी बढ़ गई है। यह पर्व हमें अपने प्रियजनों के साथ समय बिताने, रिश्तों में आत्मीयता बनाए रखने और पारिवारिक मूल्यों जीवित रखने की प्रेरणा देता हैं।

अतः यम द्वितीया केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि पारिवारिक प्रेम, धार्मिक आस्था, सदाचार और भाई-बहन के पवित्र संबंध का उत्सव है। हमें इसकी धार्मिक और सांस्कृतिक भावना को समझते हुए इसे श्रद्धा, प्रेम और सद्भाव के साथ मनाना चाहिए। यही इस पर्व की वास्तविक सार्थकता और आधुनिक समय में इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि है।



तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

तिरुमल यात्री इनको अवश्य ध्यान रखें।

- तिरुमल-यात्रा के लिए निकलने के पूर्व अपने इष्ट अथवा कुलदेवता की प्रार्थना करें।
- भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करने के पूर्व श्री स्वामिपुष्करिणी में स्नान करें, श्री वराहस्वामीजी की पूजा करें।
- मंदिर के अंदर भगवान पर ही ध्यान केंद्रित करें।
- मंदिर के अंदर पूर्णतः मौन रहें तथा ''गोविंदा'' का उच्चारण करें।
- तिरुमल के पास स्थित पापविनाशनम्, आकाशगंगा पवित्र तीर्थों तथा अंजनाद्रि आंजनेय (हनुमान) मंदिर को दर्शन करें।
- तिरुमल में रहते समय हमारे रीति-रिवाजों, आचार-व्यवहारों का पालन करें।
- अपनी भेंट हुंडी में ही डालें।
- तिरुमल मंदिर के परिसरों को स्वच्छ रखें और पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रिक थैलियों को मात्र ही उपयोग करें।

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा



श्री वेंकटेश्वर भगवान के मंदिर में पता नहीं कुछ कारणों से वेदपारायणम् कुछ दिन (वेदों का गान = नडवादिरुंडपडि-आले) रुक गया था। वैसे तो अन्य तिरुवेंकटमुडैयान की अन्य पूजा विधियों का चलना बराबर रहा है। मुदलियार तिरुक्कलिकन्रि दासर अळगप्पिरानार को यह ठीक नहीं लगा। वे तिरुमल के स्थानत्तार भी थे। इस दिशा में उन्होंने सक्रिय कदम उठाया। उन्होंने इस संबन्ध में उडैयार देवन्न-उडैयार से प्रार्थना की कि वे वेद-पाठ का आरंभ करवायें। वे चन्द्रगिरि प्रान्त के अधिकारी (गवर्नर) थे। उस समय देवराय महाराय (देवराय II) विजयनगर के राजा थे। उन्होंने सिद्धकुट्टै गाँव (बनाम श्रीनिवासपुरम्) का आधा हिस्सा तदर्थ देवदान में देने की मंजूरी दी। यह श्रीनिवासपुरम् कोट्टाल स्थलम् चंद्रगिरि के पास वैकुंठ-वलनाडु में है। यह देवदानम् राजभंडारम् का था और यह श्रोत्रियम् (वेदविदों और वेद पंडितों) के लिए दिया गया। ये मंदिर के 24 'महाजनम्' हैं, वेदपाठ करनेवाले पंडित हैं।

इस तरह वेदपारायणम् का पुनः आरंभ हो गया। 24 वेदपारायण विद्वानों ने इस अर्द्ध गाँव की आमदनी को अपने लिए अपूर्ण समझा और पूरे गाँव की आमदनी की प्रार्थना रखी। उस अर्द्ध गाँव की आमदनी 200 पणम् थी। यह आधा गाँव भगवान के मंदिर को प्रदत्त था। वैदिकों का निवेदन इसलिए मंदिर के स्थानत्तार से था। मंदिर भी इस आमदनी को खोने की स्थिति में नहीं था। परिणामस्वरूप इस कमी को और तरीखों से पूरना था। तिरुकलिकन्ड्रिदासर ने श्रीभंडारम् से संबंधित आधे गाँव को तो ले लिया, पर एक शर्त पर। भगवान के लिए उन्हें 200 पणम् देने थे। इसके लिए उन्होंने पुनः गाँववालों से कुछ पणम् दान के लिए प्रार्थना की। आस-पास के गाँववालों की सहायता से 200 पणम् वार्षिक अनुदान देने का निर्णय हो गया। हर गाँव से 5 से लेकर 21 वार्षिक पणम् तक देवदान का निश्चय हो गया। तिरुविडैयाट्टम् के निवासियों ने, लगभग 16 परिवारवालों ने, गाँव के अधिकारियों तथा और दो नाडु (समूह) के अधिकारियों के बीच एक सहमति भी हो गयी। तिरुक्कुडऊर-नाडु और वैकुंड-वलनाडु वासियों की यह सहमति रजिस्टर की गयी। उन गाँवों के नामों के साथ रकम भी दर्ज हो गयी। तदुपरान्त स्थानत्तार ने सिद्धकुट्टै

गाँव, जो श्रीभंडारम् के अधीन था, उसके अर्द्ध भागांश के 24 महाजनम् के लिए निर्देशित कर दिया।

इस प्रकार वेद पारायण की श्री वेंकटेश्वर भगवान के मंदिर में व्यवस्था हो गयी। इससे हर महीने दो वेद पंडित मंदिर में वेदपारायणम् संपन्न करेंगे, अर्थात् 12 महीनों के लिए 24 की व्यवस्था हो गयी। तिरुकलिकन्ड्रिदासर के अविश्रांत प्रयत्नों के फलस्वरूप श्री वेंकटेश्वर भगवान के मंदिर में वेदपारायण की भी व्यवस्था पुनः स्थापित हो गयी। अनेक प्रकार के आदान-प्रदानों की सूचना संख्या 199 से संख्या 203 के परिलेखों से प्राप्त होती है। ये सारी बातें शक संवत्सर 1355 में (संख्या 201 में 22 नवंबर 1433 ई. में) संपन्न हुईं। संख्या 201 शिलालेख में गाँव के अधिकारियों का शपथ भी उल्लिखित है। उत्थान-एकादशी के दिन पर (सन् 25 अक्तूबर 1433 ई. में) यह कार्य संपन्न किया गया। संख्या 202 में हर गाँव का देव पणम् निर्धारण भी मिलता है (23 नवंबर 1433 ई.)। संख्या 200 और 203 में अर्द्ध गाँव जो श्रीभंडारम् का था, और अर्द्ध का भी स्थानत्तार द्वारा 24 महाजनम् को अर्पित करने की बात उल्लिखित है, लेकिन तारीख स्पष्ट नहीं है।

इतना सब कुछ होने के बावजूद स्थानत्तर और अन्य लोगों ने वेदपारायणम् की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया। वेद पाठ करनेवाले पंडित भक्तों को प्रसाद वितरित करने की दिशा में ध्यान नहीं दिया। जो आदर सत्कार तिरुवायमोळि गीत गायकों में प्रसाद वितरण से दिखाया गया है (कोइल केल्वि एमपेरुमानार जीयर द्वारा - सं. 220), वह वेदविदों को नहीं प्राप्त था।

दो परिलेखों में गृह-निर्माण निमित्त स्थलों को बेचने से संबन्धित सूचनाएँ मिलती हैं। ये परिलेख खंडित और चार खण्डों में प्राप्त हैं। इनका समय शक संवत्सर 1355 (सन् 1433 ई.) है। एक परिलेख में देवराय महाराय - II का नामोल्लेख कुछ विरुदों (उपनामों) के साथ मिलता है। एक पेरुमाल देवियार के पास कुछ गृह निर्माण के लिए उपयोगी भूमि तिरुमल पर थी। उनकी कोई संतन भी नहीं थी। उन्होंने अपनी भूमि को मंदिर को बेचना चाहा। शायद महिला द्वारा भूमि का बेचना सही नहीं था। राजभंडारम् के अधिकारी (गवर्नर) देवन्न उडैयार ने सिद्धकुट्टै गाँव को चंद्रगिरि राज्य के अधिकारी की हैसियत से मंदिर में वेदपारायणम् के लिए एक धर्मदान के रूप में देवराय - II की ओर से दिया था। यह शक संवत्सर 1355 (संख्या 199) में हुआ। श्रीशठकोपनंबि अळगप्पिरानार गोविंदन को उपर्युक्त महिला से गृह-स्थलों को खरीदकर पुनः श्रीभंडारम् को बेचने के लिए कहा था। (यह इन दो निर्देशों से विदित होता है - ''जब मैं ने उपर्युक्त संपत्तियों के अपने स्वाधीन में लिया ---'') ''देवन्न उडैयर द्वारा मेरे ऊपर कर्तव्य निर्देश के अनुसार'' -- ''जब मैं ने मिलनेवाली संपत्ति को अपने अधीन लिया---'')। उन्होंने तत्कालीन मूल्य के अनुसार भूमि खरीदने का प्रयास किया। संख्या 204 चार गृह - स्थलों को, जो तिरुमल पर घर सहित थे, 700, 1000, 1000 -- पणम् देकर लिया। संख्या 205 सूचित करता है कि तिरुपति में स्थित चार गृह स्थलों को, घरों के साथ, 2000, 450, 1500 और 4200 पणम् देकर लिया। इस सब में रजिस्ट्री का शुल्क भी सम्मिलित है।

ये सारे गृह स्थलों की रजिस्ट्री ''आवणक्कलरी'' कार्यालय में हो गयी थी। आधुनिक काल में जो नियम-पाबंदियाँ सूचित किये जाते हैं ऐसे नियमों को उन पत्रों में भी अनुपालित किया गया। यह 15वीं सदी में ही संभव हो गया था। नियम पाबंदियों में निम्नलिखित अंश स्पष्ट थे - ''इस संपत्ति पर किसी भी प्रकार का ऋण भार नहीं है, मैं ने अपनी पूरी सहमति से इस पर हस्ताक्षर किया है, इस संपत्ति के संपूर्ण अधिकार आपको प्रदत्त हैं, यह संपत्ति आज से आपके अधीन ही रहेगी; द्वितीय और तृतीय बार मैं यह घोषित करता हूँ, इस पर कोई ऋण भार या अन्य रुकावटें जो भी बाद में निकलेंगी, मैं उन्हें स्वीकार कर मुक्त करूँगा;'' सीमा पत्थर, स्थायी प्राकृतिक संपत्तियाँ, आगे इससे बढने वाली सभी संपत्तियाँ आप की ही रहेंगी,

इस पर विकास आप अपनी इच्छा से कर सकते हैं, मालिक के रूप में आपको इस पर पूरे अधिकार होंगे; अगर आप चाहें तो इसे बेच सकते हैं; इसे बेचने, अदला - बदली करने, विभाजित करने, वंशक्रमानुसार भोग करने, भेंट करने आदि सबका अधिकार आपको ही होगा; उन कार्यक्रमों में आप से कुछ भी मैं नहीं माँगूंगा, उक्त सूची में कोई भूल-चूक हो गयी हों तो मैं पुनः उन्हें दूर करने के लिए लिखित रूप से नयी रिजस्ट्री अवश्य कराऊँगा।'' संख्या 205 में स्पष्ट किया गया है कि यह ''कानिक्कै'' (देवदान) श्रीभंडारम् के लिए देवन्न उडैयर द्वारा हुआ है। गोविंदन ने इस दस्तावेज पर हस्ताक्षर किया है। कुछ व्यक्ति इसके साक्षी भी थे।

संख्या 206 भी खंडित और खण्डों में मिलने वाला परिलेख है। यह देवराय के समय का है। इसमें एक लडकी को दत्तिका के रूप में स्वीकार करने की बात है। इस अनुमोदन के लिए दत्तिका को स्वीकार करनेवाली माता को काली-मिर्च का पानी और वास्तविक माता को हल्दी का पानी पिलाने की बात भी प्रस्तुत है।

संख्या 230 डी. में एक घर से संबन्धित जगह को बेचने की सूचना है। इसमें चित्तिरै मास और अन्न-ऊँजल (हंस के आकार की डोली) की सूचना भी है। संभव है कि यह ऊँजल उत्सव चित्तिरै मास में मनाया गया हो। यह उत्सव शायद दूसरी बार सालुव नरसिंह राय द्वारा आरंभ कराया गया होगा। यह शक संवत्सर 1395 में (15 जून 1473 ई.) मिथुन नक्षत्र शुक्ल पक्ष में 5 दिन पर्यन्त मनाया जा रहा होगा (संख्या 50 जिल्द II) यह चित्तिरै मास में कदापि नहीं (यानी अप्रैल-मई में नहीं)। ये शायद दो अलग-अलग भिन्न उत्सव ही हो सकते हैं।

सालुव नरसिंह के एक ख्यात पूर्वज रहा करते थे। ये गुण्ड़ - I के पुत्र सालुव मंगिदेव महाराज, बुक्क - I के महत्वपूर्ण सेन्याध्यक्ष थे। इन्होंने बाद में कुमार कंपन के यहाँ भी अपना कार्य संपन्न किया था। कुमार कंपन बुक्कराय के पुत्र थे। कंपन राय की सेना में उन्होंने दक्षिण के दुर्दम्य शासकों से युद्ध किया था। प्रधानतः उन्होंने संपराय या शंभुवराय के कांची के मध्य भाग में पालार नदी की सीमा में लडाइयाँ लडी थी। कुछ छोटे राजाओं के साथ-साथ उन्होंने मदुरै के महम्मदीय सुलतान से भी युद्ध किया। इनके हाथों सभी पराजित तथा सभी लुप्त भी हो गये। संपराय इनके सामने झुके तो कंपन ने उनको पुनः स्थापित भी किया था। मदुरै के सुलतान और उसकी सेना पूर्ण रूप से हार कर धराशायी हो गयी। पाण्ड्य राज्य छेड-छाडों से मुक्त हुआ। इसीलिए कुमार कंपन को ''सांपराय स्थापनाचार्य'' की उपाधि भी मिली थी। इस सांपराय या शंभुवराय ही तेलुंग सांपराय हैं और शंभुकुल - चक्रवर्ति तिरुमल्लिनाथ शंभुवरायप्पेरुमाल हैं जिनका उल्लेख संख्या 183 में हुआ है। इन्होंने कुछ समर्पण तिरुवेंकटमुडैयान को किया है या यह भी हो सकता है कि यह देवदान इनके पुत्र ने किया हो। मदुरा के सुलतान को पराजित करने के उपरांत मंगिदेव को ''परापक्षि सालुव'' नामक सम्मान मिला था। इसी का संक्षिप्त रूप सालुव राजवंशी परंपरा को मिली है; यह मान्यता प्रबल है। इसके बाद वह वंश का नाम ही बन गया है। दो परिलेखों में प्राप्त समाचार के आधार पर इसकी पुष्टि मिलती है (संख्या 179, तेलुगु में और संख्या 180 तमिल में)। उन्हीं से यह भी समाचार प्राप्त होता है कि उन्होंने विमान (मंदिर के) पर स्वर्णकलश की प्रतिष्ठा करवायी है। इतना ही नहीं शिखर को सुवर्ण लेपन से प्रभायुक्त बनाया है। श्री वेंकटेश्वर भगवान से संबन्धित यह कार्य शक संवत् 1281 में (6 जुलाई 1359 ई. में) संपन्न हुआ है। मंगिदेव को ''श्रीमान महामंडलेश्वर'' और ''मेदिनी-मीसरगंड'' भी कहा गया है। इन विरुदों के साथ ''सालुव'' विरुद नहीं है। कहा जाता है कि इन्होंने श्रीरंगनाथ स्वामी की पुनः स्थापना भी करायी है और 60,000 माडाओं (सुवर्ण मुद्राओं) का देवदान भी उन्हें समर्पित किया।

क्रमशः

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

ओंटिमिट्टा, श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर

आंध्रप्रदेश, कडपा जिला, ओंटिमिट्टा प्रांत में विराजित श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर बहुत प्राचीन श्रीराम मंदिर है। इस प्रांत को 'एकशिलानगर' भी कहते हैं। इस मंदिर का निर्माण जांबवंत ने किया। इस आलय से संबंधित दर्शन एवं सेवा का विवरण निम्नांकित हैं।

मंदिर का दर्शन समय

प्रातः 5.00 बजे से रात 9.00 बजे तक भगवान जी को दर्शन कर सकते है।

प्रातः 5.00 बजे से सुबह 7.30 बजे तक दर्शन

सुबह 7.30 बजे से सुबह 8.15 बजे तक प्रथम घण्टानाद

सुबह 8.15 बजे से सुबह 10.30 बजे तक दर्शन

सुबह 10.30 बजे से सुबह 11.15 बजे तक द्वितीय घण्टानाद

सुबह 11.15 बजे से सायं 5.30 बजे तक दर्शन

सायं 5.30 बजे से सायं 6.15 बजे तक तृतीय घण्टानाद

सायं 6.15 बजे से रात 8.45 बजे तक दर्शन

रात 8.45 बजे से रात 9.00 बजे तक एकांतसेवा



भगवान जी का सेवा टिकट विवरण

1) कल्याणोत्सव - रु.1,000/- दो व्यक्ति के लिए, समय सुबह-9.00 बजे को

2) अभिषेक - रु.150/- दो व्यक्ति के लिए, हर शनिवार, समय सुबह-6.00 बजे को

3) स्वर्ण पुष्पार्चन - रु.250/- एक व्यक्ति के लिए, हर रविवार, समय सुबह-8.30 बजे को

सूचना

मंदिर के प्रांगण में स्थित काउण्टरों में (या) ऑनलाइन के माध्यम से भी टिकट प्राप्त कर सकते है। कृपया भेंट हुण्डी में ही डालें।



नाग चतुर्थी

(नागुल चविति)

- डॉ.सी.आदिलक्ष्मी



परिचय :

नाग चतुर्थी (नागुल चविति) एक ऐसा त्योहार है जिसमें सर्पों की श्रद्धापूर्वक पूजा की जाती है। नाग चतुर्थी श्रावण और कार्तिक के महीनों में मनाई जाती है। नाग का अर्थ है सर्प और चतुर्थी - हर अमावास्या के बाद का चौथा दिन होता है। इस दिन भक्त उपवास रखते हैं और नागमय्या, सात फन वाले नाग की पूजा करते हैं। ताजे फूल, दूध, वड़ापप्पू, चलिमिडी, नुव्वुला-मुद्दा और ताजा नारियल नैवेद्य के रूप में अर्पित किए जाते है। नागमय्या के सामने तोरण भी रख जाता है। भक्त मंदिरों में बोधि वृक्ष के नीचे नाग प्रतिमा को दूध चढ़ाते है और कुछ लोग केवल उस दिन के लिए घर सर्प की मूर्ति स्थापित करके पूजा पूरी करते हैं।

पौराणिक मान्यता के अनुसार जब देवताओं और असुरों ने अमृत खोज के लिए समुद्र मंथन किया तो सर्प को रस्सी के रूप में उपयोग किया गया। इस मंथन में हलाहल विष भी निकला समस्त संसार की भलाई के लिए भगवान शिव ने विष पान किया। जिसके बाद उनका कंठ नीला हो गया और उन्हें नीलकंठ कहा जाने लगा। कहा जाता है कि इस विष की एक बूंद धरती पर गिर गई और मानव जाति ने इस विष को बुरे प्रभाव को कम करने के लिए धरती पर सर्पों की पूजा शुरू कर दी। तब से धरती पर नागुल चविति पर्व को मनाया जाने लगा।

दूसरी पौराणिक कथा :

नागुल चविति से संबंधित किंवदंतियाँ हिंदू पौराणिक कथानुसार एक बार राजा जनमेजय ने समस्त नाग जाति के विनाश हेतु सर्पमेध यज्ञ का आयोजन करवाया। जिसकी वजह से संसार के सभी सर्प और नाग यज्ञवेदी में गिरने लगे। तब नागराज तक्षक ने अपने प्राणों की रक्षा के लिए देवताओं से मदद मांगी लेकिन प्रतापी मंत्रों की वजह से तक्षक के साथ-साथ इंद्र और अन्य देवतागण भी वेदी की तरफ खिंचने लगे। तब देवता और सर्प ब्रह्माजी की शरण में पहुँचे और उन्होंने मदद की गुहार लगाई। चतुरानन ने उनसे मानसादेवी के पास पहुँचे और उन्हें अपनी व्यथा सुनाई। तब माती ने अपने पुत्र अस्तिका को आज्ञा दी कि वह सर्पमेध यज्ञ को रुकवाए। माता की

आज्ञा का पालन करते हुए अस्तिका ने यज्ञ को रोक दिया और सभी नागजाति और देवताओं की रक्षा की। यह कार्य नाग चतुर्थी के दिन ही किया गया, जिस वजह से माता मानसा ने देवताओं और मानव जाति को यह आशीर्वाद दिया कि जो भी इस दिन नागों की पूजा करेगा और इस कथा का श्रवण करेगा उसकी हर मनोकामना पूर्ण होगी। तब से इस दिन नागुल चविति उत्सव मनाया जाता है।

नाग चतुर्थी का महत्व :

नाग चतुर्थी के दिन महिलाएँ अपने जीवन साथी और बच्चों की लंबी उम्र केलिए व्रत रखती हैं। ऐसी मान्यता है कि इस दिन नाग देवताओं की पूजा करने से कालसर्प दोष, राहु-केतु दोष इत्यादि से मुक्ति मिल जाती है। इस दिन लोग अपने परिवार की सुखसमृद्धि के लिए नाग देवताओं से प्रार्थना करते हैं।

श्लोक :

सन्तानं प्राप्यते नूनं सन्तानस्य च रक्षकाः।
सर्वबाधाविनिर्मुक्तः सर्वत्र विजयी भवेत्।।
ब्रह्मलोके च सर्पः शेषनागपुरोगमः।
नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नानन्त मे सदा।।

हिंदू धर्म में प्रकृति और इसके सभी जीवों के प्रति सम्मान और श्रद्धा का विशेष महत्व है। इस धर्म में गाय, कछुआ, सर्प आदि के पूजन का विशेष महत्व बताया गया है। वहीं दक्षिण भारत में सर्प की पूजा की जाती है; जिसे नागुल चविति कहते हैं यह पर्व कार्तिक मास के शुक्लपक्ष की चतुर्थी तिथि और दीपावली के चौथे दिन की जाती है। जिसे अनंत, वासुकि और शेषनाग सहित 12 नागों को समर्पित किया जाता है। श्रावण माह की कृष्णपक्ष की पंचमी तिथि को मौना पंचमी और नाग मरुस्थल का पर्व मनाया जाता है।

1) रेगिस्तानी नाग : मरुस्थलीय इलाके में नाग पंचमी मनाए जाने को नाग मरुस्थल पंचमी कहते है। मरुस्थल का अर्थ रेगिस्तान होता है।

2) मौना पंचमी : इस दिन को झारखंड और बिहार में मौना पंचमी कहते है। मौना पंचमी का व्रत खासकर बिहार में नाग पंचमी के रूप में मनाया जाता है। व्रत रखकर पूरे दिन मौन रहते हैं। इसीलिए इसे मौना पंचमी कहते हैं। इस दिन भगवान शिव के साथी ही नागदेव की पूजा होती है। व्रत रखकर पूरे दिन मौन रहते हैं। मौन व्रत रखने से व्यक्ति की मानसिक दृढ़ता का विकास होता है और शारीरिक ऊर्जा भी बचती है। पंचमी के देवता हैं नागराज! इस तिथि में नागदेवता की पूजा करने से विष का भय नहीं रहता, स्त्री और पुत्र प्राप्ति होती है। यह लक्ष्मीप्रदा तिथि है।

3) पत्ते : कई क्षेत्रों में इस दिन आम के बीज, नींबू तथा अनार के साथ नीम के पत्ते चबाते हैं। मान्यता अनुसार ऐसा करने से



ये पत्ते शरीर से जहर हटाने में काफी हद तक मदद करते हैं।

4) पूजा : सुबह स्नान करके साफ कपड़े पहनें, इसके बाद पूजा की जगह को साफ करे, नागदेवता की फोटो या मिट्टी की मूर्ति को स्थापित करें, सबसे पहले गणेश का ध्यान करें। फिर नाग देवता को फूल, अक्षत, हल्दी और मिठाई चढ़ाए। इसके बाद भगवान शिव को जल और बेलपत्र चढ़ाए शिव मंत्रों का जाप करें और अपने परिवार की सुख-शांति के लिए नागदेवता से प्रार्थना करे, आरती करके पूजा संपन्न करे। अनेक प्रकार के सर्प पाये जाते हैं, किन्तु नागुल चविति पूजन के समय निम्नलिखित बारह नागों की पूजा की जाती है।

1) अनन्त, 2) वासुकी, 3) शेष, 4) पद्म, 5) कम्बल, 6) कर्कोटक, 7) अश्वतर, 8) धृतराष्ट्र, 9) शङखपाल, 10) कालिया, 11) तक्षक, 12) पिङ्गल।

नागुल चविति पूजन मंत्र :

सर्वे नागाः प्रीयन्तां मे ये केचित् पृथ्वीतले।

ये च हेलिमरीचिस्था येऽन्तरे दिवि संस्थिताः।।

ये नदीषु महानागा ये सरस्वतिगामिनः।

ये च वापीतडगेषु तेषु सर्वेषु वै नमः।।

इस संसार में आकाश, स्वर्ग, झीलें, कुएँ, तालाब तथा सूर्य-किरणों में निवास करने वाले सर्प, हमें आशीर्वाद दे। तथा हम सभी आपको बारम्बार नमन करते हैं।

अनन्तं वासुकिं शेषं पद्मनाभं च कम्बलम्।

शङ्खपालं धृतराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा।।

एतानि नव नामानि नागानां च महात्मनाम्।

सायङ्काले पठेन्नित्यं प्रातःकाले विशेषतः।।

तस्य विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्।।

यदि प्रतिदिन प्रातःकाल नियमित रूप से इनका जप किया जाता है, तो नागदेवता आपको समस्त पापों से सुरक्षित रखेंगे तथा आपको जीवन में विजयी बनायेंगे।

कुछ नागदेवता की मूर्तियों को स्थापित कर उनकी विधिवत् पूजा की जाती है। कुछ लोग 'पुट्टा' नामक सर्प बिल में जाते हैं। वो पूजा करते हैं और उन्हें नैवेद्य प्रदान करते है। ऐसा माना जाता है कि चींटी की पहाड़ियाँ सांपों का निवास स्थान होती हैं इसलिए लोग चींटी की पहाड़ियों की पूजा करते हैं और दूध, कुमकुम और विशेष मिठाई चढ़ावे के रूप में उन्हें चढ़ाते हैं।

चींटी की पडाड़ियों के पास दीये जलाए जाते है। चींटी की पहाड़ियों से थोड़ी सी मिट्टी लेकर कान के पीछे की तरफ लगाएँ। नागुल चविति पूजा मंत्र का पाठ किया जाता है। सपेरे कोबरा सांप लाते हैं और जो लोग चींटी की पहाड़ियों पर नहीं जा सकते उन्हें ही दूध पिलाते है। इस शुभ अवसर पर नागदेवता की पूजा करने से समस्त प्रकार की मनो कामनाएँ स्वतः ही पूर्ण हो जाती है।

नाग पंचमी का त्योहार बड़े ही धूम-धाम से मनाया जाता है। नाग पंचमी पर नागदेव को दूध और धान का लावा चढ़ाने का विधान है। लेकिन देश के कई हिस्सों में अलग-अलग प्रसाद बनता है। राजस्थान के कई हिस्सों में नाग पंचमी के दिन दाल बाटी बनती है। इसमें अरहर की दाल को पकाया जाता है। जिसके साथ आटे में अजवाइन और मोयन मिलाकर सख्त आटा गूंथा जाता है। जिसकी बटियाँ तैयार की जाती है। इन बाटियों को ओवन या उपले की आंच में पकाया जाता है। वहीं अरहर की दाल को तैयार की जाती है। उत्तरप्रदेश और बिहार के कई सारे हिस्सों में नाग पंचमी के दिन मालपुआ बनाया जाता है।

तिरुमल में गरुड़ पंचमी का त्योहार बहुत ही भक्ति भाव के साथ मनाया जाता है। तिरुमल में नाग पंचमी

और गरुड पंचमी के उत्सव पर भगवान श्री मलयप्पस्वामी को उनके सबसे प्रिय वाहन पर विराजमान किया जाता है। इस दिन रात के समय शोभायात्रा निकाली जाती है।

शेष वाहन और सर्प पूजा का महत्व :

हिन्दू पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान विष्णु स्वयं आदिशेष पर विश्राम करते है। तिरुमल के मुख्य मंदिर परिसर और आस-पास के स्थानीय मंदिरों में स्थापित नाग देवताओं की मूर्तियों पर इस दिन दूध से अभिषेक किया जाता है।

योगिक संस्कृति में नाग पर सबसे ज्यादा ध्यान दिया गया है। जहाँ पांच ज्ञानेंद्रियाँ काम नहीं करती वहीं से नाम का काम शुरू होता है। ऐसा विश्वास है कि इस दिन नागदेवता की पूजा करने से कुंडली के कालसर्प दोष के बुरे प्रभाव कम होते हैं।

भगवद्गीता में एक श्लोक है जिसमें कृष्णजी ने बताया है कि नागों में भी उनका स्वरूप है -

अनन्तश्चास्मि नागानां वरुणो यादसामहम्।

पितृणामर्यमा चास्मि यमः संयमतामहम्।।

नागों में मैं शेषनाग हूँ। हिंदू धर्म में सापों की पूजा का विशेष महत्व है। प्राचीन वैदिक और पौराणिक ग्रंथों में नाग पंचमी के त्योहार का विस्तार वर्णन मिलता है।

समग्र सृष्टि के हित केलिए बरसते बरसात के कारण निर्वासित हुआ साँप जब हमारे घर में अतिथि बनकर आता है तब उसे आश्रय देकर कृतज्ञ बुद्धि से उसका पूजन करना हमारा कर्त्तव्य हो जाता है। इस तरह नाग पंचमी श्रावण महीने में और नागुल चविथि कार्तिक शुद्ध चतुर्थी के दिन पूजा विधान रखकर हमारे ऋषियों ने बहुत ही औचित्य दिखाया है।

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामिपुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग 3 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में 5 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग 3 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में यह पवित्र पुण्य तीर्थ उपस्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में 1 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. बगीचे : देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिन में विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी.म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी.म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि



मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

शेळुन्दिरै प्पार्क्कडल् कण्तुयिल् मायन्, तिरुवडिक्कीळ्
विळुन्दिरुप्पार् नेञ्जिल् मेवुनल्ज्ञानि, नल्वेदियर्हळ्
तोळुम् तिरुप्पाद निरामानुजनै त्तोळुम् पेरियोर्
एळुन्दिरै त्ताडुमिडम्, अडियेनु क्किरुप्पिडमे ॥१०५॥

उत्तरंगकलशोदधिशायिनः सर्वेश्वरस्य पदाब्जपरिसरे निपतितानां महतां हृदि सततं विराजमानम् महाज्ञानिनामग्रेसरं परमवैदिकसत्तमसंसेव्यमान चरणारविन्दं च श्रीरामानुजं प्रपन्ना महात्मानो यत्र ससंभ्रम नृत्तमाकलयन्ति तदेव मे नित्यवासस्थानम्॥ सुंदर लहरों से समावृत क्षीरसागर में शयन करनेवाले अत्याश्चर्यचेष्टित भगवान के श्री पादों के आश्रय में रहनेवाले महात्माओं के हृदय में नित्यनिवास करनेवाले, श्रेष्ठ ज्ञानियों तथा परमवैदिकों से प्रणम्य श्रीपादवाले श्री रामानुज स्वामीजी के भक्त महात्मा लोग जिस स्थल में, आनंद के मारे उठकर नाचते, कूदते और कोलाहल मचाते हुए निवास करते हैं, वही स्थान मेरा भी निवासस्थान होगा। (विवरण - कितने ही महात्मा लोग क्षीराब्धिनाथ भगवान के भक्त होते हुए भी, उनकी उपेक्षा कर, श्री रामानुज स्वामीजी के श्रीपादों का निरंतर ध्यान करते हैं, और उस आनंद से मस्त होकर नाचते कूदते और कोलाहल मचाते रहते हैं। ऐसे महात्मा श्री रामानुज - भक्त लोग जहा विराजते हैं, मैं भी वहीं निवास करना चाहता हूँ।)



क्रमशः

श्री महालक्ष्मी चतुर्विंशति नामावलीः

तिरुमल पवित्र पुण्य क्षेत्र में स्थित आनंदनिलय में विराजित श्री वेंकटेश्वर स्वामी की मूल प्रतिमा की दिन में तीन बार अर्चना की जाती है। प्रातःकाल में तोमाला सेवा के तुरंत अष्टोत्तर सहस्र (1008) नामों के साथ सहस्र नामार्चन की जाती है। फिर दोपहर में और रात में अष्टोत्तर शत (108) नामों से पूजा की जाती है। इन सभी पूजाओं के बाद, वराह पुराण के चतुर्विंशति (24) नामों की पूजा तुरंत श्री महालक्ष्मी माँ को भी संपन्न की जाती है, जो भगवान वेंकटेश्वर स्वामीजी के वक्षःस्थल में निवास करती हैं। तिरुचानूर में भी इन्हीं नामों के साथ पूजा की जाती है। हम आगामी तिरुचानूर श्री पद्मावती देवी का ब्रह्मोत्सव के अवसर पर 'सप्तगिरि' के पाठकों के लिए पद्मावती माँ का चतुर्विंशति नाम अग्रिम रूप से प्रस्तुत कर रहे हैं।

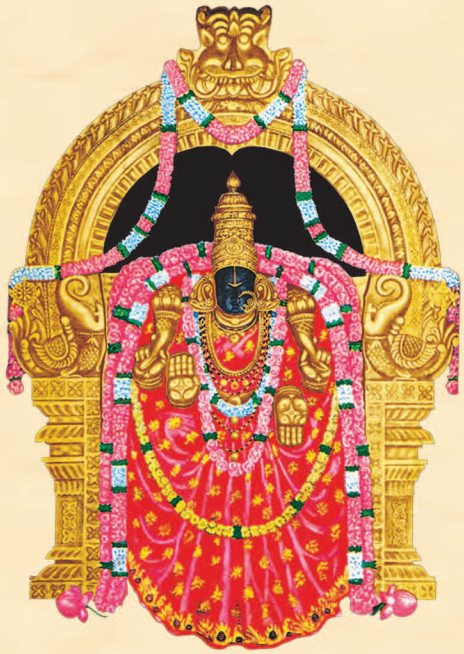

श्री वेंकटेश महिषी महालक्ष्मी प्रीत्यर्थं श्री वेंकटेश महिषी महालक्ष्मी चतुर्विंशति नामभिः श्री वेंकटेश महिषी महालक्ष्म्यर्चनं करिष्ये।

अस्य श्री महालक्ष्मी चतुर्विंशति नाम मंत्रस्य ब्रह्म ऋषिः। अनुष्टुप् छंदः।
श्री महालक्ष्मी देवता श्री वेंकटेश महिषी महालक्ष्मी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यानम्

ईशानां जगतोस्य वेंकटपते र्विष्णोः परां प्रेयसीं। तद्वक्षः स्थल नित्यवासरसिकां तत्क्षांति संवर्धिनीम्।।
पद्मालंकृत पाणिपल्लवयुगां पद्मासनस्थां श्रियं। वात्सल्यादि गुणोज्वलां भगवतीं वन्दे जगन्मातरम्।।

1) ॐ श्रियै नमः
2) ॐ लोकधात्र्यै नमः
3) ॐ ब्रह्ममात्रे नमः
4) ॐ पद्मनेत्रायै नमः
5) ॐ पद्ममुख्यै नमः
6) ॐ प्रसन्नमुखपद्मायै नमः
7) ॐ पद्मकांत्यै नमः
8) ॐ बिल्ववनस्थायै नमः
9) ॐ विष्णुपत्न्यै नमः
10) ॐ विचित्रक्षौमधारिण्यै नमः
11) ॐ पृथुश्रोण्यै नमः
12) ॐ पक्वबिल्वफलापीनतुंगस्तन्यै नमः
13) ॐ सुरक्त पद्म पत्राभ करपादतलायै नमः
14) ॐ शुभायै नमः
15) ॐ सरत्नांगद केयूर कांचीनूपुर शोभितायै नमः
16) ॐ यक्ष कर्दम संलिप्त सर्वांगायै नमः
17) ॐ कटकोज्वलायै नमः
18) ॐ मांगल्याभरणै श्चित्रै र्मुक्ताहारै र्विभूषितायै नमः
19) ॐ ताटंकैरवतं सैश्च शोभमानमुखांबुजायै नमः
20) ॐ पद्महस्तायै नमः
21) ॐ हरिवल्लभायै नमः
22) ॐ ऋग्यजुस्सामरूपायै नमः
23) ॐ विद्यायै नमः
24) ॐ अब्धिजायै नमः

एवं चतुर्विंशति नामभिः बिल्वपत्रैः लक्ष्म्यर्चनं कुर्यात् तेन सर्वाभीष्टसिद्धिर्भवति। इति चतुर्विंशति नामावलीः।





तिरुचानूर, श्री पद्मावती देवी का ब्रह्मोत्सव

2026 दिसंबर 05 से 15 तक





05-12-2026
शनिवार
दिन - लक्षकुंकुमार्चना



05-12-2026
शनिवार
रात - सेनाधिपति उत्सव, अंकुरार्पण



06-12-2026
रविवार
दिन - तिरुच्चि उत्सव, ध्वजारोहण



06-12-2026
रविवार
रात - लघुशेषवाहन



07-12-2026
सोमवार
दिन - महाशेषवाहन



07-12-2026
सोमवार
रात - हंसवाहन



08-12-2026
मंगलवार
दिन - मोतीवितानवाहन



08-12-2026
मंगलवार
रात - सिंहवाहन



09-12-2026
बुधवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन



09-12-2026
बुधवार
रात - हनुमन्तवाहन



10-12-2026
गुरुवार
दिन - पालकी उत्सव, सायं - वसंतोत्सव



10-12-2026
गुरुवार
रात - गजवाहन



11-12-2026
शुक्रवार
दिन - सर्वभूपालवाहन, सायं - स्वर्णरथ



11-12-2026
शुक्रवार
रात - गरुड़वाहन



12-12-2026
शनिवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन



12-12-2026
शनिवार
रात - चंद्रप्रभावाहन



13-12-2026
रविवार
दिन - रथ-यात्रा



13-12-2026
रविवार
रात - अश्ववाहन



14-12-2026
सोमवार
दिन - चक्रस्नान, पंचमी तीर्थ



14-12-2026
सोमवार
रात - तिरुच्चि उत्सव, ध्वजावरोहण



15-12-2026
मंगलवार
दिन - पुष्पयाग



तिरुचानूर, श्री पद्मावती देवी के मंदिर में दि.23-09-2026 से दि.26-09-2026 तक शास्त्रोक्त रूप से पवित्र मालाएँ समर्पित उत्सव अत्यंत वैभव से संपन्न किया। इस संदर्भ में मूलमूर्ति, उत्सवमूर्ति, उप-आलय, परिवार देवीदेवताएँ, विमान प्राकार और ध्वजस्तंभ को पवित्र मालाएँ समर्पित किया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. का जे.ई.ओ. डॉ.ए.शरत, आई.ए.एस., एम.एल.ए., श्री वी.नानी और मंदिर के अधिकारीगण ने भाग लिया।



दि.24-09-2026 को तिरुमल में 'भाग सवारी उत्सव' अत्यंत वैभव से संपन्न किया। इस कार्यक्रम में तिरुमल श्रीश्रीश्री बडा जीयर स्वामीजी, श्रीश्रीश्री छोटा जीयर स्वामीजी, ति.ति.दे. ई.ओ. श्री एम.रविचंद्रा, आई.ए.एस., मंदिर के आदि अधिकारीगण और भक्तजन ने भाग लिया।



दि.02-10-2026 को महात्मा गांधी जयंती के संदर्भ में स्वच्छता के अंतर्गत ति.ति.दे. अप्पलायगुंटा श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी का मंदिर का प्रतिष्ठात्मक 'स्वच्छ आंध्रा अवार्ड-2026' को तिरुपति तुडा कार्यालय के प्रांगण में कच्छापी आडिटोरियम में जिला कलेक्टर ने अवार्ड को मंदिर के अधीक्षक जी को पुरस्कार प्रदान किया।



दि.03-10-2026 को ति.ति.दे. का एच.डी.पी.पी., दास साहित्य प्राजेक्ट, श्री अन्नमाचार्य प्राजेक्ट, एस.वी.बी.सी. के आध्वर्य में ति.ति.दे. प्रशासनिक भवन का मैदान से अलिपिरि पादाल मंडप तक आटा दीपोत्सव शोभायात्रा अत्यंत वैभव से संपन्न किया। इस कार्यक्रम में जे.ई.ओ. (एच. अण्ड ई.) ति.ति.दे. बोर्ड के सदस्य, आदि उच्च अधिकारीगण ने भाग लिया।



कार्तिक मास वैभव

- श्री ज्योतीन्द्र के.अजवालिया

हिंदू पंचांग के अनुसार कार्तिक मास को सभी महीनों में अत्यंत पवित्र, मोक्षदायी और वैभव प्रदान करने वाला माना गया है। कार्तिक मास भगवान विष्णु और श्रीकृष्ण को अत्यंत प्रिय है। इस महीने में भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा, पाठ, आराधन, तुलसी विवाह, दीपदान तथा पवित्र नदी स्नान करने से जीवन में सुख, शांति, यश और ऐश्वर्य (वैभव) की प्राप्ति होती है।

कार्तिक मास के प्रमुख नियम व उपाय :

1. ब्रह्म मुहूर्त स्नान : इस माह में सूर्योदय से पहले किसी पवित्र नदी या घर पर ही जल में गंगाजल मिलाकर स्नान करने का विशेष महत्व है।

2. दीपदान : रोजाना तुलसी के पौधे के पास, मंदिर में या पीपल के पेड़ के नीचे दीपक जलाने से दरिद्रता दूर होती है और वैभव बढ़ता है।

3. तुलसी पूजा : कार्तिक मास में तुलसी जी की नियमित पूजा और परिक्रमा करने से भगवान विष्णु अति प्रसन्न होते हैं।

4. कथा श्रवण : रोजाना 'कार्तिक मास माहात्म्य' (कथा) का पाठ या श्रवण करने से समस्त पापों का नाश होता है, इस मास में श्रीमद्भगवद्गीता, श्रीरामचरितमानस और कार्तिक मास माहात्म्य कथा सुनने या पढ़ने का विधान है। गीता व भागवत का ग्यारहवें या दशम स्कंध का पाठ ज्ञान और मोक्ष देता है।

कथा श्रवण से मोक्ष की प्राप्ति होती है, और सुख-सौभाग्य मिलता है।

5. सात्विक भोजन : इस पूरा महीने में खान-पान सात्विक रखें और शरीर व मन को संयमित रखें।

6. दान-पुण्य : अपनी क्षमता के अनुसार जरूरतमंदों को अन्न, वस्त्र या दीपों का दान करें।

7. ब्रह्मचर्य का पालन : मन और आचरण में पवित्रता बनाए रखें।

कार्तिक मास के प्रमुख त्योहार :

1. दीपावली पर्व :

पूर्णिमांत परंपरा के अनुसार दिवाली कार्तिक माह में मनाई जाती है। दिवाली पूर्व उत्सव द्वादशी (बारहवें चंद्र दिवस) तिथि पर गोवत्स द्वादशी से शुरू होते हैं, और उसके बाद लगातार दिनों में धनतेरस, नरक चतुर्दशी, काली पूजा और लक्ष्मी पूजा, बलिप्रतिपदा और गोवर्धन पूजा और भाई दूज आते हैं।

2. करवा चौथ :

करवा चौथ व्रत में सौभाग्यशाली महिलाये अपने पति कि आयु के लिये पूरे दिन निर्जला उपवास रखती है, शाम को चंद्रमा दर्शन और अपने पति का दर्शन करने के बाद पति के हाथ से जल ग्रहण करती है।

3. छठपूजा :

खास करके उत्तर प्रदेश में ये त्योहार बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है। नदी या समुद्र में उतरकर स्नान करते-करते सूर्य पूजा करने का विधान है।

4. नाग नथैया उत्सव

नाग नथैया शुक्ल पक्ष (बढ़ते चंद्रमा) की चतुर्थी (चौथी तिथि) को मनाया जाता है, और यह यमुना नदी में सर्प कालिया पर भगवान कृष्ण की विजय का स्मरण कराता है। यह त्योहार बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है, और भक्त इसे मनाने के लिए वाराणसी में एकत्रित होते हैं।

5. प्रबोधिनी एकादशी (तुलसी विवाह)

प्रबोधिनी एकादशी शुक्ल पक्ष की एकादशी (ग्यारहवीं चंद्र तिथि) को मनाई जाती है। यह त्योहार चतुर्मास्य के अंत में भगवान विष्णु के जागृत होने का स्मरण कराता है, जो चार महीने का विश्राम काल होता है, और इसे नए उद्यम शुरू करने के लिए शुभ दिन माना जाता है। लोग इस दिन उपवास रखते हैं और भगवान को गन्ना अर्पित करते हैं। इस पवित्र दिन माता वृंदा (तुलसी) और भगवान शालिग्राम का विवाह किया जाता है।

6. कार्तिक पूर्णिमा : (कार्तिक दीपम)

कार्तिक माह की पूर्णिमा (पूर्णिमा के दिन) भारतीय उपमहाद्वीप में विभिन्न त्योहारों के रूप में मनाई जाती है। भारत के कुछ हिस्सों में हिंदू कार्तिक पूर्णिमा को देव दीपावली के रूप में मनाते हैं, जिसे मेले, तीर्थयात्राएँ, दीप प्रज्वलन और पवित्र नदियों में स्नान शामिल हैं। कार्तिक दीपम मुख्य रूप से हिंदू संप्रदाय रीतिरिवाज के अनुसार मनाया जाने वाला प्रकाश का त्योहार है। यह त्योहार कृत्तिका नक्षत्र के साथ मेल खाने वाले महीने की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। यह त्योहार भगवान कार्तिकेय को समर्पित है और घरों के अंदर और बाहर तेल का दीप जलाकर मनाया जाता है।

कार्तिक पूर्णिमा की मुख्य पौराणिक कथा

भगवान शिव द्वारा त्रिपुरासुर राक्षस के वध से जुड़ी है। इस दिन भगवान शिव ने एक ही बाण से तीनों असुरों का नाश किया था। इसी विजय की खुशी में देवताओं ने दीप जलाकर देव दीपावली मनाई थी।

तारकासुर के तीन पुत्र-तारकक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली (जिन्हें त्रिपुरारी या त्रिपुरासुर कहा गया) ने कठोर तपस्या कर ब्रह्माजी से वरदान मांगा। उन्होंने ऐसा नगर और ऐसा वध मांगा जो केवल एक ही बाण से एक सीध में आने पर नष्ट हो सके। अहंकार में आकर उन्होंने तीनों लोकों पर अधिकार कर लिया। तब भगवान शिव ने दिव्य रथ पर सवार होकर कार्तिक पूर्णिमा के दिन तीनों का वध किया। असुरों के आतंक से मुक्ति मिलाने पर देवताओं ने स्वर्ग में दीप जलाकर उत्सव मनाया।

मत्स्य अवतार और कार्तिकेय अवतार

कार्तिक पूर्णिमा के दिन भगवान विष्णु ने वेदों की रक्षा के लिए मत्स्य (मछली) अवतार लिया था। इसे भगवान शिव और माता पार्वती के पुत्र कार्तिकेय के प्रकट होने का दिन भी माना जाता है।

7. सोहराई

सोहराई झारखंड और पश्चिम बंगाल में आदिवासी समुदायों द्वारा मनाया जाने वाला एक फसल उत्सव है। अमावास्या (नए चंद्रमा के दिन) को मनाया जाने वाला यह उत्सव मवेशियों, कृषि भूमि का सम्मान करता है और इसमें

पूर्वजों को श्रद्धांजलि अर्पित करना और सामुदायिक भोज शामिल है। घरों की सफाई और सजावट की जाती है, पशुओं को नहलाया जाता है और विशेष भोजन दिया जाता है, और घरों की दीवारों को सोहराई कला से सजाया जाता है।

8. जलाराम जयंती

जलाराम जयंती एक धार्मिक उत्सव है जो गुजरात में रहने वाले संत जलाराम (1799–1881 ई.) की जयंती मनाता है। इस त्योहार में प्रार्थना, गायन और भोजन वितरण शामिल है।

9. भात्री द्वितीया

महीने के शुक्ल पक्ष की दूसरी तिथि द्वितीया को भात्री द्वितीया के रूप में मनाया जाता है। इस त्योहार के दौरान, बहने अपने भाइयों का मनोरंजन करती हैं, यमुना की कथा का अनुसरण करते हुए, जिन्होंने उसी दिन अपने भाई यम का मनोरंजन किया था।

धार्मिक और पौराणिक महत्व

भगवान विष्णु का जागरण : इस महीने देवउठनी एकादशी पर भगवान विष्णु चार महीने की योग निद्रा के बाद जागते हैं।

तुलसी पूजा : तुलसी का पौधा भगवान विष्णु को बहुत प्रिय है। इस पूरे माह तुलसी पूजा और उनके विवाह का विधान है।

कार्तिकेय कथा : भगवान शिव के पुत्र कार्तिकेय ने इसी माह में तारकासुर का वध किया था।

कार्तिक मास में दान करने का विशेष आध्यात्मिक महत्व

दीपदान (सर्वश्रेष्ठ दान) : नदी, मंदिर, आकाश या तुलसी के पास दीपक जलाना। यह अज्ञानता के अंधकार को मिटाकर जीवन में सुख-समृद्धि लाता है।

तुलसी दान : कार्तिक में तुलसी का पौधा दान करना अत्यंत शुभ है। इससे भगवान विष्णु की असीम कृपा प्राप्त होती है।

अन्न और जल दान : भूखे को भोजन और प्यासे को पानी देना। यह मानसिक शांति और मोक्ष की प्राप्ति कराता है।

वस्त्र दान : गरीबों या जरूरतमंदों को कपड़े दान करना। इससे आर्थिक तंगी दूर होती है और स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

तिल और कंबल दान : ठंड की शुरुआत के कारण तिल, ऊनी वस्त्र या कंबल का दान। यह कुंडली के दोषों को शांत करता है।

गौ दान (गाय का दान) : इस माह में गौ सेवा और दान करने से वैतरणी नदी पार करने का पुण्य मिलता है।

दान के नियम : दान हमेशा निःस्वार्थ भाव से करना चाहिए। अपनी सामर्थ्य के अनुसार ही दान करें, दिखावे के लिए नहीं। दान हमेशा सही और जरूरतमंद व्यक्ति को ही देना चाहिए।

कार्तिक मास में स्नान का महत्व और इसकी पौराणिक कथा :

पौराणिक कथा पद्म पुराण में वर्णित एक कथा के अनुसार, प्राचीन काल में सत्यभामा ने भगवान श्रीकृष्ण के पूछा कि उन्हें पूर्व जन्म के कौन से पुण्य से श्रीकृष्ण जैसी प्राप्ति और अटूट सौभाग्य मिला। तब श्रीकृष्ण ने उन्हें उनके पिछले जन्म की कथा सुनाई। पूर्व जन्म में सत्यभामा 'गुणावती' नाम की एक बेहद धर्मपरायण स्त्री थीं। गुणावती हर साल कार्तिक मास में नियम से सूर्योदय से पहले पवित्र नदी में स्नान करती थीं और पूरे महीने भगवान विष्णु की पूजा व दीपदान करती थीं। एक बार उनके यहाँ चोर आ गए और सारा धन लूट लिया, जिससे वह अत्यंत गरीब हो गई और जीवन में कई कष्ट सहे, लेकिन उसने कभी

अपना कार्तिक स्नान और व्रत का नियम नहीं छोडा। कार्तिक मास के व्रत और प्रातःकाल स्नान के प्रभाव से गुणावती को मृत्यु के बाद सीधे वैकुंठ लोक की प्राप्ति हुई। श्रीकृष्ण ने सत्यभामा को बताया कि उसी कार्तिक स्नान के महान पुण्य के प्रभाव से वह इस जन्म में उनकी पत्नी बनीं।

कार्तिक मास स्नान की सबसे प्रसिद्ध और पारंपरिक कहानी

एक समय की बात है, एक वृद्ध माता (बुढिया माई) हर साल कार्तिक मास में नियम से पवित्र स्नान और पूजा-पाठ करती थीं। उनका एक बेटा और बहू थे। बहू स्वभाव से थोड़ी उदासीन और अपनी सास के व्रत-नियमों के प्रति लापरवाह थी। एक दिन जब बुढिया माई स्नान के लिए जाने लगीं, तो उन्होंने अपनी बहू से फलाहार (व्रत का भोजन) डिब्बे में पैक करने को कहा। बहू ने ईर्ष्या या लापरवाही के कारण टिफिन में बिना कुछ डाले खाली डिब्बाबंद टिफिन ही थमा दिया। बुढ़िया माई का बेटा उन्हें छोडने रास्ते में गया। रास्ते में उसने माता से कहा कि वे वहीं बैठकर फलाहार कर लें। माँ ने भगवान का नाम लेकर जैसे ही टिफिन खोला, तो कार्तिक महाराज की कृपा से वह खाली टिफिन स्वादिष्ट और सुंदर फलों व व्यंजनों से भरा हुआ मिला। माँ ने बेटे के साथ प्रेमपूर्वक फलाहार किया और भगवान का धन्यवाद किया। सच्चे मन, निष्ठा और श्रद्धा से किए गए कार्तिक स्नान का फल कभी खाली नहीं जाता। भगवान सच्चे भक्त की हर परिस्थिति में सहायता करते हैं और उसके भंडार हमेशा भरे रखते हैं।

तो आइए हम सब मानव ये पुण्यकारी कार्तिक मास में स्नान, दान, पूजा, आराधन करके हमारे जीवन को धन्य बनाये, कार्तिक मास के वैभव के साथ पवित्र बनके हमारे ज्ञान वैभव को भी बढाये और मोक्ष का अधिकारी बने।

जय श्रीमन्नारायण।



तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

तिरुमल यात्री इनको अवश्य ध्यान रखें।

- तिरुमल-यात्रा के लिए निकलने के पूर्व अपने इष्ट अथवा कुलदेवता की प्रार्थना करें।
- भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करने के पूर्व श्री स्वामिपुष्करिणी में स्नान करें, श्री वराहस्वामीजी की पूजा करें।
- मंदिर के अंदर भगवान पर ही ध्यान केंद्रित करें।
- मंदिर के अंदर पूर्णतः मौन रहें तथा ''गोविंदा'' का उच्चारण करें।
- तिरुमल के पास स्थित पापविनाशनम्, आकाशगंगा पवित्र तीर्थों तथा अंजनाद्रि आंजनेय (हनुमान) मंदिर को दर्शन करें।
- तिरुमल में रहते समय हमारे रीति-रिवाजों, आचार-व्यवहारों का पालन करें।
- अपनी भेंट हुंडी में ही डालें।
- तिरुमल मंदिर के परिसरों को स्वच्छ रखें और पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रिक थैलियों को मात्र ही उपयोग करें।

श्री प्रपन्नामृतम्

(66वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड



(गतांक से)

श्री भूतपुरी माहात्म्य

दयासागर यतिराज श्री रामानुजाचार्य शिष्यों के बीच वैकुण्ठ गमन के पहिले तीन दिन तक अहर्निश मुक्तिप्रद उपदेश देते रहे। उनके द्वारा वर्णित गूढ़ार्थ को सुनकर सभी शिष्य आश्चर्य चकित हुए और उन्होंने पूछा कि- ''भगवान! आपने अनुक्तपूर्व अर्थों का प्रकाशन किया है, जिससे हम लोगों को शंका हो रही है कि इसका कारण क्या है? उसे आप कृपा करके बताइये।'' तब शिष्यों द्वारा यह पूछने पर उन्होंने उसका कारण बताते हुए कहा कि- ''भगवान ने मुझे परमपद दिया है, आज से चौथे दिन मैं वैकुण्ठधाम जाऊँगा।'' इस रोमांचकारी बात को सुनकर सारे शिष्य श्री यतिराज के भावी वियोग को असह्य मानकर शरीर त्याग करने के लिये कृतसंकल्प हो गये। इस पर भगवत्पाद श्री रामानुजाचार्य क्रुद्ध होते हुए बोले- ''यदि मेरे वियोग में आप लोगों ने देहत्याग किया तो मैं शाप देता हूँ कि अंतिम समय में आप लोगों को श्री शठकोपाचार्य, श्री यामुनाचार्य, श्री महापूर्णाचार्य स्वामी प्रभृति महापुरुषों का एवं नित्यसूरियों का दर्शन न होगा। मेरे वियोग में शरीर त्याग करने वाले पतित हो जायेंगे।''

व्याकुल करने वाली भगवान श्री रामानुजाचार्य की यह वाणी सुनकर भयभीय शिष्य हाथ जोड़कर बोले कि- ''भगवान! आपकी सेवा किये बिना हम क्षण भर भी जीवित नहीं रह सकते। अतः आप हम लोगों को इसका उपाय बताइये।'' शिष्यों की यह वाणी सुनकर श्री यतिराज ने लोकरक्षणार्थ उत्तम कलाकारों द्वारा आत्मगुणोपेत अपना एक अर्चाविग्रह बनवाया, और उसका गाढ़ालिंगन करके विग्रह का ब्रह्मरन्ध्र सूँघकर उसमें अपनी शक्ति प्रतिष्ठित कर दी। प्रज्वलित दीप से उत्पन्न द्वितीय दीप की प्रभा की भाँति यतिराज के दूसरे प्रतिबिम्ब के रूप में इस अर्चाविग्रह को देखकर उसके सभी शिष्य अत्यन्त हर्षित हो गये। इस अर्चाविग्रह की सविधि प्रतिष्ठा करके भगवान श्री रामानुजाचार्य अपने शिष्यों से बोले कि- ''भक्तगण! मेरे इस अर्चाविग्रह को देखो। यह तुम लोगों के लिये सर्वश्रेष्ठ है। नित्य भक्तिपूर्वक तुम लोग इसकी पूजा करो। तब मुझे सन्तोष होगा और तुम लोगों का मंगल होगा।'' उनके इस उपदेश को स्वीकार करके सभी शिष्य उनके समान ही इस अर्चाविग्रह का कैंकर्य करने लगे। प्रतिदिन पूजित यतिराज

श्री रामानुजाचार्य की मूर्ति (अर्चा) प्रतिदिन पृथ्वी पर नवोदित सूर्य की भाँति प्रख्यात हुई। अनेकों दिव्यदेशों में इसके समान ही अर्चाविग्रह स्थापति किये। जिनमें भूतपुरी श्रीरंगम् और यादवाद्रि के तीन प्रधान विग्रह उन्हीं के हाथों से प्रतिष्ठित होने के कारण संसार में प्रसिद्ध है। इनमें भी श्री भूतपुरी स्थापित मूर्ति प्रधानतम है क्योंकि वहाँ उनका अवतार स्थल है।

श्रीरंगम् में सर्वप्रथम वाधूलकुल भूषण, दाशरथी आचार्य के पुत्र श्री रामानुजदास ने भगवान श्री रामानुजाचार्य को प्रणाम करके निवेदन किया कि आप अपने अवतार स्थल श्री भूतपुरी में हमारी रक्षार्थ अपना अर्चाविग्रह प्रदान करने की कृपा करें। उनकी बात को स्वीकार उन्होंने शुभ मुहूर्त में अपने शिल्पी के द्वारा अपने समस्त चिह्नों से चिह्नित एक अर्चाविग्रह का निर्माण कराया और गाढ़ालिंगन करते हुए दीर्घश्वास द्वारा विलक्षण तेजोद्वीप कर दिया। दीपोत्पन्न दूसरी प्रभा की तरह यतिराज के दूसरे प्रतिबिम्ब को देखकर सभी लोग हर्षित हुए। भगवान श्री रामानुजाचार्य ने इस मूर्ति की प्रतिष्ठा के लिये समय का निर्णय कहकर रामानुजदास को यह मूर्ति प्रदान कर दी। उसने भक्तिपूर्वक सर्वविध मंगलों से युक्त ब्राह्मणों के साथ श्री भूतपुरी में जाकर शिष्यों सहित श्री केशव भगवान की अध्यक्षता में विधिपूर्वक प्रतिष्ठा की। उस मूर्ति के जलाधिवास तथा अभिषेक काल में नेत्रोन्मीलन से समय पर अर्चावतार के नयन से रक्तप्रवाह होने लगा था। अकस्मात् रक्तरंजित नेत्रों को देखकर समस्त श्रीवैष्णवों ने विस्मय किया। जिस दिन नयनों से रक्त निकला, उसी दिन श्री भूतपुरी में उनके अर्चाविग्रह के लिये प्रतिष्ठित कर शीघ्र ही श्री यतिराज के पास जाकर यह वृत्तान्त सुनाया। प्रतिमा की प्रतिष्ठा का और श्री यतिराज के द्वारा निर्णित प्रतिष्ठा का दिन तथा उनके दैहिक आयास का दिन-तीनों एक ही दिन होने से उस दिन भगवान श्री रामानुजाचार्य का भूतपुरी में सम्पूर्ण कलावतार माना गया। लोकसंरक्षक श्री यतिराज के श्रीविग्रह का दर्शन आज भी भूतपूरी में होता है। अतः यह नगरी मूक्ति देने वाली है।

यतिराज श्री रामानुजाचार्य उन प्रतिमाओं द्वारा आज भी साकार हैं। उनकी अवतार स्थली भूतपुरी सभी दिव्यदेशों से श्रेष्ठ हैं। अष्टोत्तरशत दिव्य देशों में निवास करने का जो पुण्य फल प्राप्त होता है, वहीं एकमात्र भूतपुरी में निवास करने से मिल जाता है। अतः मुमुक्षुजनों को चाहिये कि वे यहाँ पर निवास करें। बड़े से बड़ा पापी यहाँ श्री यतिराज के अर्चाविग्रह के दर्शन कर, प्रणाम कर पापों से मुक्त हो जाता है। यहाँ मेष मास के आर्द्रा नक्षत्र में श्री यतिराज का तिरुमंजन (अभिषेक) कराने से मनुष्य समस्त पापों से छूटकर अन्त में वैकुण्ठ जाते हैं। यतिराज श्री रामानुजाचार्य के चरणारविन्दों के अविचल प्रेमी भक्त इस संसार में परम धन्य माने जाते हैं। वे सबके लिये पूज्य एवं कृतार्थ हैं। इनका कैंकर्य परमपुरुषार्थ प्रदाता है। इनका अतिमानुष्य प्रभाव भगवान के द्वारा भी अवर्णनीय है। फिर मनुष्य उनके वैभव का वर्णन कर ही क्या सकता है।

संसार के कल्याणार्थ भूतपुरी में अर्चावतार के रूप में अवतीर्ण यतिराज श्री रामानुजाचार्य की अद्भुत तथा श्रेष्ठ महिमा को जानने वाले मनुष्य कृतार्थ हैं। साधु संसार के लिये आदर्श, अनुपमेय और भोग तथा मोक्ष के प्रदाता, श्रीवैष्णव सिद्धान्त के आद्य प्रवर्तक यतिराज श्री रामानुजाचार्य का जो मनुष्य कैंकर्य करते है, वे मोक्ष के अधिकारी होते हैं।

।। श्री प्रपन्नामृत का 66वाँ अध्याय पूर्ण हुआ ।।

क्रमशः

पुष्प याग (यज्ञ)

- डॉ.जी.मोहन नायुडु

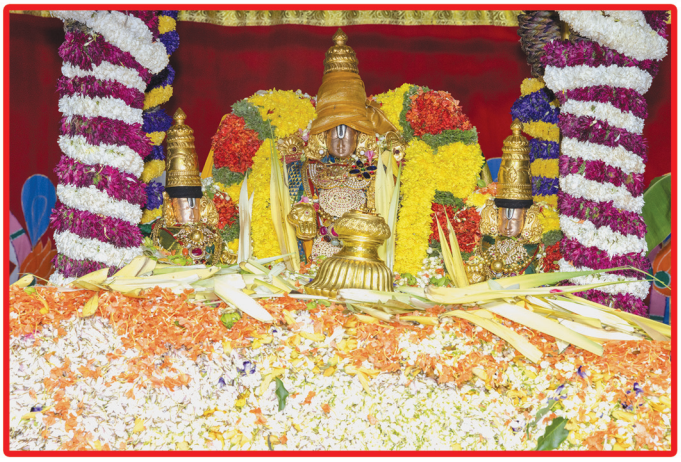

भारतीय संस्कृति में पुष्पों का विशेष महत्व है। भारत में हर अवसर पर पुष्पों का बडा महत्व है। भारतीय संस्कृति कई उप संस्कृतियों का मिश्रण है और इसका फूलों से गहरा संबंध भी है। सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक पुष्प भारतीयों के जीवन का अभिन्न अंग है। इन फूलों का प्रतीकात्मक महत्व भी है। फूल विविधता, जीवंतता एवं उदारता के रूप में देश की एकता का प्रतिनिधित्व करते हैं, और इसे समृद्ध सांस्कृतिक सुगंध तथा मूल्य प्रदान करते हैं। विभिन्न परंपराओं में फूल हमेशा धर्म और पूजा से जुडे हुए हैं, और इनके साथ बहुत सारी किंवदंतियाँ जुडी हुई हैं। जीवन के हर उत्सव, त्योहार एवं प्रार्थना में पुष्पों का विशेष स्थान होता है।

भारतीय संस्कृति और परंपरा में फूल जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। भारतीय संस्कृति में फूलों का महत्व इस प्रकार है -

आध्यात्मिक महत्व :

फूल शक्ति, पवित्रता और उदारता के प्रतीक हैं। सुंदर एवं ताजे पुष्पों को देखकर मन को शांति मिलती है और सकारात्मक अनुभव भी प्राप्त होता है। भारतीय परंपरा में कमल को पवित्र फूल माना जाता है। ब्रह्म, विष्णु, लक्ष्मी, सरस्वती जैसे देवताओं से जुडे होने के कारण कमल पवित्र फूल माना जाता है। अन्य फूलों का भी अपना-अपना विशेष महत्व है। फूल पवित्रता, श्रद्धा एवं सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है। भारतीय परंपरा में देवी-देवताओं को प्रसन्न करने का सबसे सरल और श्रेष्ठ माध्यम पुष्प अर्पित करना माना गया है। इसलिए ईश्वरीय उपासना में भक्त देवी देवताओं को प्रसन्न करने के लिए एवं समृद्धि की आशा में पुष्प या पुष्प मालाएँ अर्पित करते हैं। विभिन्न देवी-देवताओं को उनकी पसंद के अनुसार विशेष फूल चढाए जाते हैं।

आध्यात्मिक महत्व के अलावा अन्य कारण से भी पुष्पों का महत्व है। कई पुष्पों में औषधीय गुण पाये जाते हैं - जैसे गुलाब, चमेली और गेंदा के औषधीय गुणों का वर्णन मिलता है। पर्यावरण की शुद्धि में इनका बडा महत्व है। पुष्पों का प्राकृतिक-सुगंध वातावरण को शुद्ध और सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण बनाता है।

तिरुमल में पुष्प याग :

पौराणिक कथाओं के अनुसार तिरुमल में सर्वप्रथम पुष्प-यज्ञ 15वीं शताब्दी में हुआ और बहुत लंबे समय के बाद 1980 से तिरुमल में यह कार्यक्रम पुनः प्रारंभ हुआ। हर वर्ष तिरुमल श्री वेंकटेश्वर (बालाजी) के मंदिर में कार्तिक माह श्रवणा नक्षत्र (श्रीहरि के जन्म नक्षत्र) के अवसर पर बडे वैभव के साथ पुष्प याग मनाया जाता है। सुप्रभात, तोमाला, अर्चना आदि सेवाएँ सुबह की सेवाओं के बाद भगवान श्रीदेवी, भूदेवी सहित श्री मलयप्पस्वामी के उत्सवमूर्तियों को एक विशेष

मंच पर स्थापित किया जाता है और वेद मंत्रों के उच्चारण के बीच पुष्प याग महोत्सव आरंभ किया जाता है। इस अनुष्ठान में आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडू, कार्नाटक और अन्य राज्यों के भक्तों द्वारा इकट्ठे किये गये 7 टन से अधिक विविध जातियों के सुगंधित फूल भगवान को समर्पित करते हैं। पुष्प याग का अर्थ है देवताओं को विभिन्न प्रकार के सुगंधित पुष्पों और तुलसीदल से अलंकृत करके अभिषेक करना। इस पुष्प यज्ञ में कई प्रकार के फूलों का उपयोग किया जाता है। यह पुष्प-यज्ञ पवित्र तिरुमल श्री वेंकटेश्वर भगवान के मंदिर में संपन्न होनेवाले सबसे पवित्र पुष्पार्पण अनुष्ठानों में से एक है, जो विशेष पुष्प पूजा के माध्यम से भक्ति का प्रतीक माना जाता है। हिंदू मंदिरों की परंपराओं में निहित यह प्राचीन वैदिक अनुष्ठान भगवान श्री वेंकटेश्वर



(बालाजी) को हजारों सुगंधित पुष्प अर्पित करने का एक अनुष्ठान है, जो श्रद्धा भक्ति और समर्पण का प्रतीक है।

पुष्प याग की विशिष्टताएँ :

तिरुमल पुष्प याग का महत्व भक्तों के मन को शुद्ध करने और समृद्धि, स्वास्थ्य एवं आध्यात्मिक ज्ञान के लिए दिव्य आशीर्वाद पाने में निहित है। इस पवित्र अनुष्ठान के दौरान पूजारी पारंपरिक पद्धति में मौसमी फूलों को सावधानी से सजाते हैं, जिससे एक दिव्य वातावरण पैदा होता है।

पुष्पार्पण भक्तों द्वारा सप्तगिरीश ब्रह्माण्ड नायक श्री वेंकटेश्वर को दी जानेवाला हार्दिक भेंट का प्रतीक माना जाता है। आगम शास्त्र और वैष्णव परंपराओं के अनुसार पुष्प आध्यात्मिक चेतना के विकास और भक्ति सुगंध का प्रतीक है जो भगवान श्री वेंकटेश्वर (बालाजी) को प्रसन्न करता है। मान्यता है कि पुष्पार्पण के माध्यम से मंदिर का यह शुद्धीकरण अनुष्ठान से भगवान की कृपा प्राप्त होती है और नकारात्मक ऊर्जा दूर हो जाती है तथा पवित्र क्षेत्र में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। श्री वेंकटेश्वर भगवान की पुष्प पूजा प्राचीन परंपराओं के अनुसार होती है। यहाँ प्रत्येक फूल का अपना विशेष महत्व होता है - गुलाब प्रेम का, कमल पवित्रता का, चमेली भक्ति का और गेंदा शुभ का प्रतीक है, जो सामूहिक रूप से एक पूर्ण आध्यात्मिक भेंट का प्रतीक है।

तिरुमल के पुष्प याग में भाग लेने वाले भक्त भगवान के सामने प्रस्तुत हजारों ताजे फूलों की व्यवस्था को देखकर गहन आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त करते हैं।

पुष्प याग के संदर्भ में भगवान को भव्य पुष्प अलंकरणों से सुशोभित देखकर भक्त प्रसन्न हो जाते हैं और पवित्र मंत्रोच्चारण में भाग लेकर आशीर्वाद भी



प्राप्त करते हैं। यह पुष्पार्पण-परंपरा विशेष त्योहारों एवं ब्रह्मोत्सव के दौरान महत्व रखती है। उस समय मंदिर का वातावरण एक उद्यान के रूप में परिवर्तित हो जाता है।

पुष्प याग का प्रयोजन :

देश की समृद्धि, समस्त मानव जाति की शांति, देश में भूकंप, बाढ, महामारियों के निवारण की कामना करते हुए आगम शास्त्र के अनुसार पुष्प याग संपन्न किया जाता है। और यह भी बताया जाता है कि आगम शास्त्र के अनुसार पुष्प यज्ञ करने से अश्वमेध यज्ञ के समान फल मिलता है अर्थात् भक्तों को सुख, ऐश्वर्य और मोक्ष मिलता है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति में फूलों का विशिष्ट स्थान है। दिन-प्रतिदिन



अनेक शुभ अवसरों पर इनका उपयोग किया जाता है। केवल सौन्दर्य भावना की दृष्टि से ही नहीं बल्कि पूजा-अर्चना के संदर्भ में भक्त इन्हें देवी-देवताओं को पवित्र वस्तु के रूप में समर्पित करते हैं। देवी-देवताओं की कृपा पाने के लिए भक्तों द्वारा पुष्पार्पण की यह प्रथा बहुत पुरानी है। पुष्पों की कोमल पंखुडियाँ और सुगंध प्रेम, भक्ति और पवित्रता के प्रतीक हैं। प्राचीन परंपरा के अनुसार जनता को प्राकृतिक विपत्तियों से बचाने के लिए मंदिरों में पुष्प याग किया जाता है। भक्तों का विश्वास है कि हर वर्ष ब्रह्मोत्सव समाप्त हो जाने के बाद आनेवाले श्रवणा नक्षत्र के दिन तिरुमल में संपन्न किये जानेवाले पुष्प याग से संपूर्ण दोष दूर होकर समस्त मानव जाति को सकारात्मक ऊर्जा, सुख और समृद्धि मिलती है। इस प्रकार इसका आध्यात्मिक महत्व है।

सितंबर-2026 महीने का क्विज-50 के समाधान

1) श्रीकृष्ण, 2) पार्वती-भगवान शिव/परमेश्वर,

3) भगवान विष्णु, 4) प्रभु श्रीराम,

5) चक्रस्नान, 6) अनंताल्वान,

7) 14 वर्षों तक, 8) तिरुमल में,

9) दुर्वा (दूब घास),

10) गणेश महराज, 11) हनुमान,

12) श्री वेंकटेश्वर/बालाजी,

13) श्री अनंत पद्मनाभ स्वामी,

14) यमुना नदी,

15) लघुशेष वाहन.



क्षीराब्धि द्वादशी

- डॉ.एच.एन.गौरीराव

हिंदू पंचांग के बारह मासों में कार्तिक मास को अत्यंत शुभप्रद मास माना जाता है। इससे सब मासों में से इसका महत्वपूर्ण स्थान है।

स्कंदपुराण के अनुसार :

न कार्तिकसमो मासो न कृतेन समं युगम्।
न वेदसदृशं शास्त्रं न तीर्थ गंगया समम्।।

अर्थात 'कार्तिक मास के समान दूसरा कोई मास नहीं, सत्ययुग के समान कोई युग नहीं, वेद के समान कोई शास्त्र नहीं और गंगा के समान कोई नदी नहीं है।'

कार्तिक मास की इसी श्रेष्ठता के कारण इस मास में मोक्ष की प्राप्ति के लिए, आध्यात्मिक उन्नति के लिए अनेक अनुष्ठान किये जाते है। इस पवित्र मास में भगवान विष्णु और भगवान शंकर की समान रूप से पूजा की जाती है।

इस पवित्र कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष का बारहवे दिन 'क्षीराब्धि द्वादशी' कहा जाता है। क्षीराब्धि द्वादशी भगवान विष्णु को समर्पित है। कहा जाता है कि कार्तिक शुक्ल एकादशी के दिन भगवान विष्णु चार महीनों की योग निद्रा के बाद जागृत हो जाते हैं और द्वादशी के दिन माता तुलसी से विवाह करते हैं। एक अन्य मान्यता के अनुसार, कृतयुग में कार्तिक शुक्ल द्वादशी के दिन अभूतपूर्व क्षीर सागर का मंथन हुआ था। इस सागर मंथन के दौरान माता लक्ष्मी प्रकट हुई, और भगवान विष्णु से विवाह हुआ था, इसलिए यह दिन 'क्षीराब्धि द्वादशी' या 'मथन द्वादशी' भी कहा जाता हैं।

एक और किंवदंती के अनुसार इस दिन को क्षीर सागर मंथन के अंत में अमृत प्रकट होने के बाद भगवान विष्णु अमृत कलश को पकड़कर आनंद के अश्रु बहाए, जिससे तुलसी का जन्म हुआ, और तुलसी माता को भगवान विष्णु ने अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया। एक अन्य कथन के अनुसार श्री महाविष्णु कार्तिक शुक्ल द्वादशी को गोधूलि के समय श्री महालक्ष्मी, देवताओं और ऋषियों के संग वृंदावन पधारते हैं। इसीलिए कार्तिक शुक्ल द्वादशी के दिन जो भी तुलसी की पूजा करके दीपदान करते हैं, वे मरण के बाद वैकुंठ पहुँच जाते हैं।

भगवान विष्णु योगनिद्रा से उठना :

कार्तिक मास में शुक्ल पक्ष द्वादशी तिथि 'उत्थान द्वादशी', 'क्षीराब्धि द्वादशी' कहा जाता है। यह एक महत्वपूर्ण त्यौहार है, भगवान विष्णु की योगनिद्रा से उठने से संबंधित है।

बलि चक्रवर्ती महान पराक्रमी असुर राजा था। अपने पराक्रम से वह देवताओं पर आक्रमण करने चला था। इससे सब देवताएँ घबरा गये और अपनी रक्षा के लिए विष्णु भगवान से प्रार्थना करते हैं। भगवान विष्णु देवताओं की रक्षा के लिए बौने ब्राह्मण वामन अवतार में बलि चक्रवर्ती के पास जाते हैं। उनसे तीन पग भूमि मांगते हैं। अपने गुरु शुक्राचार्य के मना करने पर भी बलि चक्रवर्ती दान देने को तैयार हो जाते हैं। भगवान वामन विराट रूप धारण करके एक पग से आकाश को, दूसरे पग से भूमि को नाप लेते है। तीसरे पग के लिए कोई जगह बच नहीं पाता है। तत्क्षण बलि चक्रवर्ती को एहसास होता है कि यह ब्राह्मण भगवान विष्णु ही है। कोई चारा न होने पर बलि चक्रवर्ती अपने वादा निभाने के लिए अपने सिर पर भगवान वामन के चरण को रख लेते हैं। भगवान विष्णु इसी अवसर पर बलि चक्रवर्ती को पाताल लोक में भेजते हैं। बलि

चक्रवर्ती भगवान विष्णु से पाताल लोक में अपने साथ रहने की विनती करते है, ताकि उनके उठने के बाद भगवान को देख सके। विष्णु भगवान भी मान लेते हैं। पर भगवान विष्णु के बिना लक्ष्मी माता दुखित होती है और लोकपालक के बिना तीनों लोकों में हाहाकार मच जाता है। माता लक्ष्मी बलि चक्रवर्ती को रक्षा सूत्र बांधकर विष्णुमूर्ति को वापस वैकुंठ भेजने की प्रार्थना करती है। भगवान विष्णु भी चार महीनों के लिए पाताल में योग निद्रा के बाद फिर लोकपालन के लिए वैकुंठ जाने का निर्णय लेते हैं। यह योगनिद्रा शारीरिक निद्रा न होकर पूर्ण चेतना में आध्यात्मिक विश्रम की स्थिति है। चातुर्मास के दौरान लोक संचालन का दायित्व परमेश्वर लेते हैं। इससे चातुर्मास के दौरान भगवान शंकर की विशेष पूजा की जाती है। इन चार महीनों को 'चातुर्मास' कहते है। विष्णु भगवान की योगनिद्रा आषाढ़ शुक्ल की देवशयनी एकादशी से आरंभ होती है। वे कार्तिक शुक्ल देवउठनी एकादशी को योग निद्रा से जागृत होते हैं। इससे इस दिन को 'प्रबोधिनी एकादशी' या 'देवउठनी एकादशी' कहते हैं। श्रद्धालु कार्तिक शुक्ल एकादशी को उपवास रहकर अनेक श्लोक गाते हुए भगवान को योगनिद्रा से उठाते हैं। जैसे -

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते।
त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत् सुप्तं भवेदिदम्।।
उत्थिते चेष्टते सर्वमुत्तिष्ठोत्तिष्ठ माधव।
गतामेघा वियच्चैव निर्मला निर्मलादिशः।।

'उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविंदो, उत्तिष्ठ गरुड़ध्वज।
उत्तिष्ठ कमलाकांत, त्रैलोक्यम् मंगलम कुरु।।'

अर्थात - 'हे गोविंद! आप निद्रा से उठिए। हे जगन्नाथ! आपके सोते रहने से यह सम्पूर्ण जगत सोता रहेगा (निष्क्रिय हो जाएगा)। आपके उठने पर सभी लोग कार्यों में प्रवृत्त हो जाएँगे। हे माधव! उठिए, आकाश साफ हो गया है, बादल भी नहीं है। दिशाएँ निर्मल हो गई हैं। हे गोविन्द! अठिये। हे गरुड़ध्वज! हे कमलाकांत! उठकर इस लोक का मंगल कीजिए।'

एकादशी के बाद दूसरे दिन को 'उत्थान द्वादशी', 'हरिबोधिनी द्वादशी' कहते हैं। इस दिन भगवान विष्णु तुलसी माता से विवाह करते हैं। इस पवित्र विवाह को लक्ष्मी-नारायण विवाह के रूप में बड़े उत्साह और भक्ति से मनाया जाता है।

तुलसी विवाह

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की उत्थान द्वादशी या क्षीराब्धि द्वादशी के दिन देवी लक्ष्मी के अवतार तुलसी और विष्णु के दामोदर रूप का विवाह संपन्न होता है।

तुलसी माता का विवाह की कथा इस प्रकार चलती है

पौराणिक कथा के अनुसार असुर राजा कालनेमी की पुत्री वृंदा थी, जो अतीव सुंदर और सुशील कन्या थी। वह बचपन से भी भगवान विष्णु की अत्यंत भक्ति से पूजा करती थी। कालनेमी अपनी पुत्री का विवाह जालंधर से करवाता है। जालंधर समुद्र से जन्मा था, और वह बहुत ही पराक्रमी राजा था। विवाह के पश्चात वृंदा पातिव्रत्य धर्म को निष्ठा से पालन करती थी। जालंधर वीर होने के साथ-साथ अपनी पत्नी की पातिव्रत्य शक्ति से अजेय और मृत्युंजय बन गया था। उसको हरानेवाला तीनों लोकों में कोई भी नहीं था। इसी घमंड से उसने देवताओं पर आक्रमण करना शुरू किया। जालंधर से भयभीत देवता विष्णु से प्रार्थना की। भगवान विष्णु संकट में पड़ गए। एक ओर जालंधर की पत्नी वृंदा अपनी भक्त थी और दूसरी ओर देवताओं की रक्षा करनी थी। अंत में धर्म की रक्षा के लिए और जालंधर के नाश के लिए भगवान विष्णु ने वृंदा के पातिव्रत्य धर्म को भंग करने का संकल्प किया। इससे वे जालंधर का छद्म वेष धारण करके वृंदा के पास गए। वृंदा ने उन्हें अपना पति समझकर स्पर्श किया, जिससे उनका पातिव्रत्य भंग हो गया। उसके पातिव्रत्य का भंग होते ही युद्धक्षेत्र में जालंधर मारा गया।

जब वृंदा को सच्चाई का पता चला तो उसने क्रोध में आकर भगवान विष्णु को कठिन शिला होने का शाप दिया।

भगवान विष्णु भी नैतिक रूप से अपनी गलती को जानते थे, इससे वृंदा के शाप को स्वीकार करते हुए शालिग्राम पत्थर बन गए। भगवान विष्णु ने वृंदा को यह वर प्रदान करते हुए कहा कि 'अगले जन्म में तुम पवित्र तुलसी के रूप में पूजी जाएगी और तुलसी के रूप में सदा तुम मेरे साथ रहोगी।' इससे शालिग्राम के साथ तुलसी को रखना पवित्र माना जाता है। वृंदा ने मृत पति जालंधर के साथ खुद आत्मदाह कर लिया। जहाँ वृंदा भस्म हुई वहाँ तुलसी का पौधा निकला। तब से हर साल कार्तिक मास की देवउठनी एकादशी के बाद द्वादशी के दिन शालिग्राम के साथ तुलसी का विवाह किया जाता है। भगवान विष्णु ने कहा कि 'जो व्यक्ति भी शालिग्राम से तुलसी विवाह करेगा उसे इह लोक में यश और परलोक में मोक्ष प्राप्त होगा।'

तुलसी पूजा करने की विधि :

क्षीराब्धि द्वादशी के दिन, विवाहित महिलाएँ शाम को मंगलमय जीवन के लिए तुलसी की पूजा करती हैं। द्वादशी के दिन शाम को स्नान करके और पारंपरिक तरीके से कपड़े पहनते हैं। सबसे पहले जहाँ तुलसी की पूजा की जाती है, उस जगह को शुद्ध करके फिर वहाँ तुलसी के वृंदावन को रखा जाता है। वृंदावन में तुलसी के साथ फल सहित आवले की टहनी को भी रखी जाती है। आंवले का पेड़ धार्मिक, आयुर्वेदिक और पर्यावरण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण और पूजनीय माना जाता है। इतना ही नहीं, आवले पेड़ को स्वयं भगवान दामोदर का रूप माना जाता है। इसी वृंदावन में श्रीकृष्ण की प्रतिमा को या शालिग्राम को रखा जाता है, जिसके साथ तुलसी का विवाह किया जाता है। तुलसी वृंदावन को विद्युत दीपों से तथा मिट्टी के दीपों से और रंग-बिरंगे फूलों और फूलमालाओं से अलंकृत किया जाता है। इस वृंदावन के सामने रंगोली रची जाती है। तुलसी पौधे को हल्दी कुमकुम और फूलों से पूजा की जाती है। धूप, दीप आदि से षोडशोपचार पूजा की जाती है। फलों, नारियल, तांबूल तथा दक्षिण और खाद्यान्न रखकर नैवेद्य अर्पित किया जाता है। नैवेद्य के पश्चात आरती उतारी जाती है। अंत में आँवले के पाँच या सात या नौ दीपों से आरती उतारी जाती है। तुलसी अष्टोत्तर शतनामावली का पाठ किया जाता है। तुलसी माता के कीर्तन गाए जाते हैं। व्रत करने वालों को व्रत कथा सुननी या पढ़नी चाहिए। अपने पापों को नष्ट करने के लिए, तुलसी माता के आशीर्वाद के लिए, सुख शांति समृद्धि के लिए आत्म प्रदक्षिण नमस्कार किया जाता है। इस प्रकार पूजा करने से मनोवांछित फल की सिद्धि होती है। तुलसी विवाह का आयोजन धार्मिक और सामाजिक और पारिवारिक संबंधों को मजबूत करता है। माता तुलसी से संबंधित श्लोक है -

नमो नमस्ते तुलसी पापं हर हरिप्रिये।
तुलसी श्रीर्महालक्ष्मीर्विद्या यशस्विनी।

तुलसी का महत्व

भारतीय संस्कृति में तुलसी को पूजनीय माना जाता है, औषधीय तथा धार्मिक महत्व दोनों तुलसी में विद्यमान है।

महाप्रसाद जननी सर्वसौभाग्यवर्धिनी।
आधि व्याधि हरा नित्यं तुलसी त्वं नमोऽस्तु ते।।

इसका भाव है- 'तुलसी माता! आप महाप्रसाद की जननी और सभी प्रकार के सौभाग्य को बढ़ाने वाली हैं। आप हमारे मानसिक और शारीरिक रोगों को हरने वाली हैं, आपको मेरा प्रणाम है।'

तुलसी के पौधे को माता लक्ष्मी का अवतार माना जाता है। इस पौधे को घर में लगाने से सुख-शांति मिलती है। महिलाएँ प्रतिदिन इसकी पूजा करती हैं तो नकारात्मक शक्ति का नाश होता है। जिस घर में तुलसी होती है वहाँ असामयिक मृत्यु नहीं हो सकती। मृत्यु के समय तुलसी और गंगा का जल मुख में डालकर पीने से वैकुंठ धाम को प्राप्त करता है।



कपिलतीर्थ मुक्कोटी

- श्री सी.सुधाकर रेड्डी

कपिलतीर्थ आन्ध्रप्रदेश के तिरुपति शहर में तिरुमल पहाडियों की तलहटी में स्थित एक प्रसिद्ध और प्राचीन शिव मंदिर व पवित्र जलप्रपात है। यह मंदिर पारंपरिक द्रविड शैली में बनाया गया है और एक प्राकृतिक गुफा के प्रवेश द्वार पर स्थित हैं। श्री कपिलेश्वर स्वामी के लिंग जिसे स्वयंभू माना जाता है। प्रवेश द्वार पर ही नंदी की पत्थर की एक बडी मूर्ति भक्तों को स्वागत करती है। झरना सीधे मंदिर के पवित्र कुंड में गिरता है, जिससे एक अनोखा आध्यात्मिक माहौल बनता है।

तिरुपति क्षेत्र मुख्य रूप से भगवान वेंकटेश्वर (विष्णु) के मंदिरों के लिए जाना जाता है, लेकिन कपिलतीर्थ इस क्षेत्र का प्रमुख शिवधाम है। तिरुमल बालाजी के पहाडी मंदिर जाने से पहले कई तीर्थयात्री कपिलतीर्थ आते हैं। मंदिर को 13वीं से 16वीं सदी के बीच विजय नगर के शासकों, खासकर सालुवा नरसिंह देव राय, जाने माने श्रीकृष्णदेवराय और बाद के कुछ शासकों जैसे वेंकटपतिराय और श्रीकृष्णदेवराय के दामाद अलिया रामराय से बहुत अच्छा संरक्षण मिला। इस मंदिर की ऐतिहासिक प्राचीनता 11वीं सदी की है। इस मंदिर का पहला शिलालेख चोल राजा राजेन्द्र-1 (1012 ई.ब-1044 ई.ब) के शाशनकाल का है। श्री कपिलतीर्थ स्वामी मंदिर को अधिकारिक तौर पर 1988 में तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने अधीन में लिया था।

श्री कपिलेश्वर स्वामी मंदिर, तिरुपति :

श्री कपिलेश्वर स्वामी मंदिर श्री वेंकटाचल पर्वत के नीचे एक पुराना तीर्थस्थल है। इस 'दिव्यस्थल' में 'कपिलतीर्थ' नाम की पवित्र पुष्करिणी के साथ, एक पहाडी गुफा मंदिर है, जहाँ श्री कपिलेश्वर स्वामी और श्री कामाक्षी के साथ विराजमान है। स्थलपुराण हमें कपिलतीर्थ क्षेत्र के बारे में बताता है, जिसे वेंकटाचलम क्षेत्र जितना ही पुराना है, उतना पुराना तीर्थस्थल के रूप में माना जाता है।

श्री कपिलेश्वर महालिंग :

गंगा नदी के किनारे अपने आश्रम में माने जिस पाताल में 'भोगवती' के नाम से जाना जाता है, विष्णु के वंशज कपिल महर्षि, एक शिवलिंग की पूजा कर रहे थे। वह महाशिवलिंग न सिर्फ अजीब चमक से चमक रहा था, बल्कि चमत्कारिक रूप से दिन-ब-दिन ऊपर

की ओर बढ रहा था, यहाँ तक कि धरती को भेदता हुआ और आखिर में वेंकटाचलम क्षेत्र के स्रोत से अपने आप निकल आया।

श्री महाविष्णु, जिन्होंने उसे लगातार बढते और शानदार शिवलिंग को और बढ़ने से रोकने का फैसला किया, उन्होंने खुद को ग्वाले के रूप में बदल लिया और उसकी रक्षा की। जबकि ब्रह्म ने कपिलधेनु में बदल लिया, उस शिवलिंग पर दूध की अनगिनत धाराएँ बरसाई, उसका अभिषेक किया और अलग-अलग तरीकों में प्रार्थना की। इन सबके साथ महाशिवलिंग, जो पाताल लोक से तेजी से बढ रहा था, वेंकटाद्री पर्वत के नीचे बनी एक गुफा में एक स्वयंभू अस्तित्व के रूप में खड़ा था। पाताल लोक से निकले शिवलिंग के साथ, पास में मौजूद 'भोगवती' गंगा भी फूट पड़ी। सभी देवताओं ने वहाँ बने भोगवती तीर्थ के पानी से बढे और निकले शिवलिंग का अभिषेक किया और पूजा की। क्योंकि इस शिवलिंग की पूजा सबसे पहले पाताल लोक में कपिल महर्षि ने की थी। इसलिए इस शिव को 'कपिलेश्वर' और 'कपिलेश्वर महाशिवलिंग'' जैसे मशहूर नामों से जाना जाता है। इसी तरह 'भोगवती', 'गंगा', जो इस कपिल शिव की मौजूदगी में निकली 'कपिलतीर्थ' नाम से सबसे पवित्र पुष्करिणी के तौर पर जानी जाती है और इसमें नहाने वाले सभी लोगों को बड़े पापों से मुक्त करके पवित्र बनाती है।

श्री कपिलेश्वर स्वामी, श्री कामाक्षी के साथ, जो उस कपिलेश्वर में प्रकट हुए थे, भक्तों के प्रति रक्षक के रूप में, सभी पापों का प्रायश्चित करते हुए सभी शुभताएँ देते हैं।

श्री कामाक्षी समेत कपिलेश्वर एवं त्रिमूर्ति के स्वरूप दर्शन :

श्री कपिलतीर्थ, तिरुमल तिरुपति देवस्थान के अधीन में रहे तिरुपति का इकलौता पुराना शैव मंदिर है। यह कपिलतीर्थ वह जगह है, जहाँ धरती पर एक की जगह पर त्रिदेव के दर्शन देते है।

कूर्मस्योपरिसुस्थितेफणिपतौ तन्मूर्थिन भूमौस्थितम्।
लिंगम गोपयसाभिषे, मजम गोपालरूपम हरम।।
तत्रैवश्री कपिलर्षिणा परमया भक्त्या सुमैः पूजितम्।
दृश्यम चित्र महोत्रिमूर्ति मिलितम द्यायामि लिंगोत्तमम्।।

श्री कूर्म पर आदिशेष, अपने पैरों पर धरती और उस धरती को भेदते हुए पाताल लोक। वहाँ से महाशिवलिंगम का आविर्भाव हुआ। ब्रह्म गाय के रूप में शिवलिंग के दूध से अभिषेक करते है। श्रीहरि ग्वाले के रूप में उस गाय की रक्षा करते हैं। कपिल महामुनि उस शिवलिंग की पूजा नागलिंग पुष्पों से करते हैं। इस तरह त्रिमूर्ति के स्वरूप में शानदार और दिव्यता के रूप में प्रकाशित हो रहे श्री कपिलेश्वर महालिंग को लोग ध्यान से पूजा कर रहे हैं।

कपिलतीर्थ के विविध नाम :

त्रेतायुग में इस शिवलिंग की पूजा अग्नि देव ने की थी। और इसका नाम आग्नेय लिंग रखा गया था। द्वापरयुग में लिंग के अनादि रूप में रहे कपिलेश्वर की पूजा और स्तुति सुदर्शन चक्र भगवान ने की। इसलिए इस तीर्थ को चक्रत्ताल्वार तीर्थ भी कहा जाता है। कलियुग में कपिल गाय ने कपिलेश्वर स्वामी को दूध से अभिषेक किया गया था। शिवलिंग के साथ पाताल लोक से आई भोगवती नदी कपिलतीर्थ बन गई। कहा जाता है कि कपिल महर्षि पाताल लोक से वेंकटाचलम तक उस सुरंग से यात्रा करते थे जिससे यह नदी आती थी। अभी, यह सुरंग पवित्र जलों से भरकर एक झील की तरह बन गई है। यही कपिलतीर्थ पुष्करिणी है।

श्री कपिलेश्वर के लिंग का रूप एवं आकार :

इस मंदिर में कपिलेश्वर स्वामी बहुत शानदार है, जिनका निचला हिस्सा सफेद चाँदी से चमक रहा है,

बीच का हिस्सा हरे सोने रंग का है और ऊपरी हिस्सा लाल तांबे का है। श्री कपिलेश्वर स्वामी भक्तों को पश्चिम, उत्तर, पूर्व, दक्षिण, ऊपरी हिस्से (ऊपर) की दिशाओं में पाँच चेहरों के साथ और पश्चिम की ओर तीन आँखों के साथ दिखाई देते हैं। भक्त इन तीन आँखों को स्पष्टता के साथ देख सकते हैं। इस देवता को ''सद्योजातमूर्ति'' कहा जाता है, जिसका मतलब है वह भगवान जो तुरंत भक्तों की इच्छाएँ पूरी करते हैं।

तीर्थ :

जो स्थान मन, प्राण एवं शरीर को निर्मल कर दे, वही तीर्थ है।

स्कंदपुराण में तीर्थ :

महाभारत, श्रीमद्भागवत, वायुपुराण में तीर्थ-खंड आदि कई ग्रंथों में और पुराणों में तीर्थ महिमा का वर्णन मिलता है। स्कंद पुराण के अनुसार, तीर्थ केवल किसी भौतिक स्थान या नदी का नाम नहीं है, मानसिक शुद्धता और ईश्वर प्राप्ति का एक सशक्त माध्यम है। स्कंद पुराण में तीर्थों को मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है।

1. भौम तीर्थ (भौगोलिक तीर्थ) :

पृथ्वी पर स्थित पवित्र नदियाँ, पर्वत और धाम जैसे काशी, केदारनाथ, उज्जैन, द्वारका, बदरीनाथ एवं तिरुमल।

2. मानस तीर्थ (आंतरिक तीर्थ) :

मनुष्य की भीतर स्थित गुण जैसे सत्य, क्षमा, दया, इंन्द्रियनिग्रह और शुद्ध हृदय। स्कंद पुराण में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यदि मन शुद्ध नही है, तो भौम तीर्थों में स्नान का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता।

3. जंगम तीर्थ (जीवंत तीर्थ) :

संत, ज्ञानी, गुरु और माता-पिता जिनकी सेवा करने से तीर्थ यात्रा का फल मिलता है।

तीर्थविधि :

कपिलतीर्थ शेषाचल पर्वत पहाडियों में रहे 365 तीर्थों मशहूर है। भविष्योत्तर पुराण के अनुसार, श्रीनिवास भगवान ने वकुल माता को आकाशराज की बेटी पद्मावती से शादी की बाते करने के लिए भेजते हुए कपिलेश्वर की पूजा करने और उनकी इजाजत लेने के लिए कहा था। इस जगह पर बड़ों के लिए की जानेवाली 'तीर्थविधि' मशहूर है। माधव नाम के एक ब्राह्मण ने, जिसने पहले बहुत पाप किए थे और बिगड गया था, अज्ञानता में कपिलतीर्थम् में 'मिट्टी' से विंदास बनाया और अपने बड़ों के लिए तीर्थ विधि की पद्धति का नर्वहण करके वेंकटाचल पर्वत का आरोहण किया। श्रीनिवास भगवान ने उनके पापों को हरण करके मोक्ष प्रधान किया।

मुक्कोटी :

हिन्दू धर्म में मुक्कोटी का संबंध तीन करोड देवी-देवताओं या तिथि विशेष से है। तीर्थों और धार्मिक परंपराओं के संदर्भ में इसके मुख्य रूप से दो अर्थ होते है।

1. मुक्कोटी एकादशी (वैकुंठ एकादशी) :

दक्षिण भारत के प्रमुख तीर्थों जैसे तिरुपति और श्रीरंगम में धनुर्मास (पौष माह) के शुक्ल पक्ष की एकादशी को 'मुक्कोटी एकादशी' कहा जाता है। ऐसी मान्यता है



कि इस दिन 33 करोड (33 कोटि) देवी-देवता भगवान विष्णु के दर्शन के लिए वैकुंठ के द्वार पर उपस्थित होते हैं। इस दिन तीर्थ क्षेत्रों में मंदिर के विशेष 'उत्तर द्वार' से प्रवेश करके दर्शन करने से पापों से मुक्ति और मोक्ष की प्राप्ति मानी जाती है।

2. मुक्कोटी देव / मुक्कोटी तीर्थ :

'मुक्कोटी' शब्द को तेलुगु और कन्नड भाषाओं से लिया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ ''तीन करोड'' (3 कोटि) होता है।

जब किसी पवित्र तीर्थस्थल या पर्व (जैसे कुंभमेला या गोदावरी पुष्कर) के बारे में कहा जाता है कि वहाँ ''मुक्कोटी देवों का वास है'', तो इसका अर्थ होता है कि उस समय उस तीर्थ क्षेत्र में करोड़ों देवी-देवताओं और पवित्र नदियों का सन्निधान मौजूद है।

संक्षेप में, तीर्थों के संदर्भ में 'मुक्कोटी' का अर्थ करोडों देवी-देवताओं की उपस्थिति से युक्त अत्यंत पवित्र अवसर या स्थान होता है।

कपिलतीर्थ क्षेत्र में इस साल नवंबर 24, मंगलवार को, कार्तिक पूर्णिमा के दिन 'कपिलतीर्थ मुक्कोटी' मनाई जाती है। इस अवसर पर धार्मिक आयोजन और उत्सव मनाया जाता है। इस कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर पवित्र कपिलेश्वर मंदिर में स्नान करने से वेंकटाचल पहाडों में 365 पवित्र तीर्थों में स्नान करने का फल मिलेगा। कामाक्षी सहित श्री कपिलेश्वर स्वामी के दर्शन करने और यहाँ के सभी देवताओं की पूजा करने से सारी खुशहाली मिलेगी।

पर्व के प्रमुख आकर्षण व अनुष्ठान :

भारत अनादि काल से संस्कृति, आस्था, आस्तिकता और धर्म का महादेश रहा है। इसके हर भाग और प्राप्त में विभिन्न देवी-देवताओं से संबद्ध कुछ ऐसे अनेकानेक प्राचीन और धार्मिक स्थान (तीर्थ स्थान) है, उनमें से प्राचीन एक तीर्थस्थल और पवित्र पुष्करिणी कपिलतीर्थ है। यहाँ कार्तिक पूर्णिमा के दिन विविध पूजाएँ एवं अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता है।

1. पवित्र स्नान :

'मुक्कोटी के दिन सुबह से श्रद्धालु कपिलतीर्थ के कुंड (पुष्करिणी) में स्नान करते हैं। माना जाता है कि इस दिन स्नान करने से जन्म-जन्मांतर के पाप मिट जाते हैं।

2. विशेष पूजा और अभिषेक :

मंदिर के मुख्य देवता श्री कपिलेश्वर स्वामी और माता कामाक्षी देवी को विभिन्न द्रव्यों (दूध, दही, शहद, भस्म आदि) से अभिषेक किया जाता है।

3. दीपोत्सव :

शाम के समय जलप्रपात और पूरे प्रांगण को हजारों मिट्टी के दियों से सजाया जाता है।

इस प्रकार लोग कार्तिक पूर्णिमा के दिन कपिलतीर्थ मुक्कोटि का उत्सव मनाकर शाम को आलय प्रांगण में दिये जलाकर अपने-अपने हृदयों में खुशियाँ भरकर परिवार के साथ अपने-अपने घर चले जाते है। मुख्यतः तिरुपति के आस-पास के इलाकों में नाए घर बनाने से पहले यहाँ स्वामी की पूजा करते हैं और जिस कनस्ट्रक्शन साइट पर वे जाना चाहते हैं, वहाँ स्वामी के पवित्र जल छिड़कते है, जिससे वे जगहें शुद्ध हो जाती है। और घर बनाना शुरू हो जाता है। भक्तों का मानना है कि मंदिर के पुजारी भगवान के दर्शन करने आनेवाले भक्तों पर भगवान का पवित्र जल छिड़कते है, जिससे भक्तों का मन पवित्र हो जाता है।



नवम्बर महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र



मेष राशि - शरीर स्वस्थ रहेगा परन्तु थकान और नींद की कमी के कारण शरीर गड़बड़ हो सकता है। धनलाभ होंगे, कार्यक्षेत्र में नई जिम्मेदारियाँ मिल सकती हैं। पारिवारिक रिश्तों में खुलकर बातचीत करने से गलतफहमियाँ दूर होंगी और सभी का सहयोग मिलेगा। अपनों से वरिष्ठ लोगों से सलाह करें। किसी भी कार्यों को जल्दबाजी में निर्णय लेने से बचें और योजनाबद्ध तरीके से काम करें।



वृषभ राशि - खानपान और नियमित दिनचर्या पर ध्यान न देने से सेहत गड़बड़, लेकिन अनुकूलता बनी रहेगी, जीवन साथी के साथ कटु व्यवहार, इसलिए खुलकर बातचित करें जिससे रिश्ते मजबूत बनेंगे। योजनाएं मध्यम, संतति सुख प्राप्त होंगे। कार्यक्षेत्र में नई जिम्मेदारियों के साथ प्रगति के अवसर मिल सकते हैं।



मिथुन राशि - मानसिक तनाव के कारण मन खिन्न रहेगा। पर्याप्त आराम करें। पारिवारिक सुख, अपनों का सहयोग, विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है। कार्यक्षेत्रों के सिलसिल में यत्र-तत्र यात्रा हो सकती है। शत्रुपक्ष कमजोर, दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा, कारोबार के क्षेत्रों में प्रगति। पुराना आर्थिक एवं कोर्ट कचहरी का मामला सुलझने की संभावना है। एक समय में एक महत्वपूर्ण काम पर ध्यान केंद्रित करें।



कर्कटक राशि - तनाव से बचे और पूर्ण आराम करें। आपका सेहत ठीक रहेगा, महीने की शुरुआत कार्यों में व्यस्तता। धनलाभ होंगे परन्तु अधिक खर्च होने के कारण मन खिन्न रहेगा। आय सामान्य रहेगी, अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण रखें। सरकारी कार्यक्षेत्रों में जिम्मेदारियाँ बढ़ सकती हैं। घर-परिवार में माता-पिता से उलझे हुए कार्यों पर महत्वपूर्ण निर्णय हो सकती है।



सिंह राशि - यह माह आपके लिए मध्यम रहेगा, सेहत ठीक और सक्रियता बनी रहेगी। जीवन साथी का विशेष ध्यान रखे बीच-बीच में शारीरिक क्लेश जो आपको परेशान कर सकता है। नई जिम्मेदारियाँ और अवसर मिल सकते हैं। आर्थिक स्थिति में सुधार के अवसर बन सकते हैं। आत्मविश्वास रखें, लेकिन दूसरों की राय का भी सम्मान करें छात्रों को परिश्रम के उपरान्त सफलता, भूमि-भवन-वाहन प्राप्ति में सफलता मिलेगी।



कन्या राशि - पेट की समस्या हो सकती है इसलिए पाचन और दिनचर्या पर विशेष ध्यान दें। धनहानि, आलस्य और क्रोध पर पूर्ण नियन्त्रण रखें। काम में अनुशासन और मेहनत से अच्छे परिणाम मिल सकते हैं। आर्थिक मामलों में सावधानी और योजना अवश्य बनाए। परिवार और कार्यक्षेत्रों में छोटी-छोटी बातों को लेकर गलतफहमी हो सकती है।



तुला राशि - शारीरिक स्थिति गड़बड़, सन्तान के तरफ से मन व्यथित रहेगा। नए लोगों के संपर्कों से कार्यक्षेत्रों में नए अवसर मिल सकते हैं जिससे आय के नए स्त्रोत बन सकते हैं, लेकिन खर्चों का संतुलन बनाए रखें। अविवाहित लोगों को नया संबंध मिलने का अवसर मिल सकता है। राहु केतु का जप एवं तत् संबंधित पदार्थों का दान करना उत्तम होगा।



वृश्चिक राशि - यह माह आपके लिए मध्यम रहेगा, शारीरिक मानसिक तनाव एवं कष्ट, रक्त-पित्त-विकार, कार्य में पदोन्नति होगी और नई जिम्मेदारियाँ बढ़ेंगी। महीने के मध्य के बाद आत्मविश्वास और सक्रियता बढ़ सकती है। वरिष्ठ सदस्यों का मार्गदर्शन लाभदायक रहेगा। चन्द्र-मंगल की पूजा एवं आराधना करें, सुन्दरकाण्ड पाठ करने का प्रयास करे।



धनुष राशि - पाचन और दिनचर्या पर विशेष ध्यान दें वरना शारीरिक उथल-पुथल बनी रहेगी। घर-परिवार में छोटी-छोटी बातों को लेकर गलतफहमी हो सकती है इसलिए धैर्य और सामांजस बनाए रखें। घरेलू जिम्मेदारियाँ बढ़ सकती है। अपने बुद्धि विवेक के द्वारा काम को पूर्णता से करें। आर्थिक मामलों में सावधानी और योजनाबद्ध तरीके से कार्य करें। काम में अनुशासन और मेहनत से अच्छे परिणाम मिल सकते हैं।



मकर राशि - सेहत ठीक रहेगा जिससे चित्त प्रसन्न रहेगा परन्तु अपने वाणी व आहार पर पूर्ण संयम रखें। काम का दबाव बढ़ सकता है, लेकिन अनुभव और सीखने के अवसर भी मिलेंगे। आय स्थिर रखने के लिए खर्चों पर नियंत्रण आवश्यक। अपनों के साथ पुराने मतभेद बातचीत से सुलझ सकते हैं। पारिवारिक रिश्तों में धैर्य बनाकर रखने से सभी कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



कुंभ राशि - सेहत कमजोर, शारीरिक छीनता, उदर और वात-विकार बना रहेगा, बन्धु-बान्धवों की चिन्ता से मानसिक तनाव। काम में नई दिशा या नया अवसर मिल सकता है। मित्रों और परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। मानसिक शांति के लिए पर्याप्त आराम और समय निकालें। अपनी योजनाओं में व्यावहारिकता बनाए रखें।



मीन राशि - नियमित दिनचर्या, पर्याप्त नींद और विश्राम पर ध्यान दें। नए लोगों से सम्पर्क न करे सावधान रहें, धन संबंधी मामलों में सावधानी रखें और अनावश्यक खर्च से बचें। भावनात्मक उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। जीवनसाथी की बात ध्यान से सुनें। परिवार के प्रति जिम्मेदारियाँ बढ़ सकती है।

(नीतिकथा)

जहाँ समझ वहाँ संगम

- श्री के.रामनाथन

उस गाँव के बाहरी इलाके में, प्रकृति की परम शांति से युक्त एक सुंदर नदी का किनारा स्थित था। वहाँ एक बार महान आध्यात्मिक शक्ति वाले एक ऋषि आकर ठहरे और तपस्या करने लगे। गाँव के लोग दृढ़तापूर्वक यह मानते थे कि वे अत्यंत तपस्वी हैं और उनके पास अद्भुत सिद्धियाँ एवं शक्तियाँ हैं। इस कारण, प्रतिदिन गाँव से बड़ी संख्या में लोग उनके पास आते, उन्हें प्रणाम करते और अपने जीवन के विभिन्न दुखों व समस्याओं को उनके सामने प्रस्तुत करते। ऋषि भी उनकी समस्याओं को करुणापूर्वक सुनते और उनके लिए सर्वोत्तम समाधान बताकर भेजते थे। उनके मार्गदर्शन से लोग अपने दुःखों से मुक्त होकर बहुत सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे थे।

इस स्थिति में, ऋषि की महिमा के बारे में सुनकर उसी गाँव की एक युवती एक दिन अपने मन की व्यथा बताने के उद्देश्य से नदी के तट पर पहुँची। उसका चेहरा चिंता और उदासी से भरा हुआ था। वह ऋषि के पास पहुँची और श्रद्धापूर्वक उनके चरणों में प्रणाम करके खड़ी हो गई। उसे स्नेहपूर्वक देखते हुए ऋषि ने कोमल स्वर में पूछा, ''बेटी! तुमहें क्या कष्ट है। वह कौन सा दुःख है जो तुम्हें सता रहा है?''

इस पर वह स्त्री आँखों में आँसू भरकर बोली, ''ऋषिदेव! मेरे पति देश की सीमा पर युद्ध लड़ने गए थे। कई महीनों के बाद वे अभी-अभी घर लौटे हैं। परंतु, इतने लंबे समय तक हमसे दूर रहने के बावजूद, वे अब मुझ पर पहले की तरह प्रेम व्यक्त नहीं करते। उनका ध्यान और दृष्टि मुझ पर पड़ती ही नहीं है। वे सदैव किसी न किसी चिंता और अशांति में डूबे रहते हैं। मुझे मेरे पति का प्रेम पुनः प्राप्त होना चाहिए। इसके लिए मुझे कोई दुर्लभ औषधि देने की कृपा करें,'' उसने कातर स्वर में विनती की।

उसकी स्थिति को समझते हुए ऋषि ने तनिक सोचकर कहा, ''बेटी! तुम्हारे पति कई महीनों तक युद्धभूमि में रहे हैं, है न? वहाँ उन्होंने अत्यंत भयानक दृश्य, रक्तपात और अपने साथी मनुष्यों की मृत्यु देखी होगी। इस कारण उनका मन अत्यंत अशांत और गहरे प्रभाव में होगा। इसलिए, तुम कुछ समय धैर्य रखो। जब वे स्वयं उन भयानक स्मृतियों से बाहर आ जाएँगे, तो वे तुम पर पहले से भी अधिक प्रेम बरसाएँगे,'' ऋषि ने उसे सांत्वना दी। परंतु वह स्त्री इसे स्वीकार करने को तैयार नहीं हुई और हठ करते हुए बोली, ''नहीं ऋषिदेव! मैं प्रतीक्षा नहीं कर सकती। आपको मुझे तुरंत कोई न कोई औषधि देनी ही होगी। मुझे किसी भी तरह उनका प्रेम शीघ्र अति शीघ्र प्राप्त करना ही है।''

उसकी अधीरता और हठ को देखकर ऋषि ने कहा, ''ठीक है बेटी! जैसी तुम्हारी इच्छा। परंतु, तुम्हारे पति के मन को परिवर्तित करने वाली वह दुर्लभ औषधि बनाने के लिए मुझे एक जीवित बाघ की मूँछ का बाल चाहिए!'' यह सुनकर वह स्त्री बिना किसी झिझक के बोली, ''ऋषिदेव! आप इसकी चिंता न करें! मैं कहीं न कहीं से एक बाघ की मूँछ का बाल लाकर आपको देती हूँ,'' यह वचन देकर वह तुरंत वहाँ से चली गई। बाघ की मूँछ का बाल लाने के लिए वह स्त्री जंगल की ओर निकल पड़ी। घने जंगल में खोजते हुए, उसने देखा कि एक बहती हुई नदी के किनारे एक बाघ पानी पीने के लिए आकर खड़ा था। उसने पेड़ों की ओट से उस बाघ को देखा। उसी समय बाघ की नज़र भी उस पर पड़ गई। मनुष्य को देखते ही वह बाघ पूरे जंगल को दहला देने वाली भयानक आवाज़ में दहाड़ने लगा।

भयभीत होकर वह स्त्री तुरंत पास के एक बड़े पेड़ के पीछे छिप गई और वहीं से बाघ को देखने लगी। थोड़ी देर तक भयंकर रूप से दहाड़ने के बाद, वह बाघ नदी का पानी

पीकर शांति से जंगल में चला गया। अगले दिन भी वह स्त्री साहस जुटाकर उसी स्थान पर आई। उसने देखा कि वह बाघ फिर से नदी किनारे आया हुआ था। बाघ ने जैसे ही उसे देखा, हमेशा की तरह भयानक रूप से दहाड़ा। परंतु इस बार वह स्त्री डरकर भागी नहीं, बल्कि अपने भय को थोड़ा दूर कर बाघ के सामने थोड़ी दूरी पर निर्भीक होकर खड़ी रही। थोड़ी देर दहाड़ने के बाद बाघ को यह अहसास हुआ कि इस स्त्री से उसे कोई खतरा नहीं है, और वह शांत हो गया।

इस प्रकार कई दिनों तक वह स्त्री नियम से जंगल में आती और उसी स्थान पर खड़े होकर उस बाघ को स्नोहपूर्वक देखती। जैसे-जैसे दिन बीतते गए, बाघ ने उसे देखकर दहाड़ना पूरी तरह बंद कर दिया। वह उसके आने का अभ्यस्त हो गया। अब उस स्त्री ने अगला कदम उठाया। वह घर से जो बकरी का मांस लाई थी, उसे बाघ से थोड़ी दूरी पर रखकर उसे खाने के लिए दिया। बाघ भी बिना किसी संदेह के आया और बड़े चाव से वह मांस खाया। इस प्रकार कुछ दिनों तक वह लगातार मांस लाकर बाघ को देती रही और धीर-धीर उसके पास जाकर उसके शरीर को प्यार से सहलाने लगी। बाघ भी उसके स्पर्श को पसंद करने लगा और एक बिल्ली की तरह शांत होकर खड़ा रहता।

एक दिन, वह स्त्री हमेशा की तरह बाघ के लिए मांस रखकर उसके अत्यंत निकट जाकर खड़ी हो गई। जब बाघ भोजन करने लगा, तो उसने बड़ी कोमलता से बाघ के सिर को सहलाते हुए, अचानक बड़े साहस के साथ उसकी मूँछ का एक बाल उखाड़ लिया। परंतु, वह बाघ उस स्त्री के प्रेम का ऐसा वशीभूत हो चुका था कि उसने उस पर तनिक भी हमला नहीं किया और न ही उस पर दहाड़ा। उसने दिया हुआ मांस खाया, उसे प्यार से देखा और शांतिपूर्वक वहाँ से चला गया। सफलता के आनंद के साथ बाघ की मूँछ लेकर लौटी वह स्त्री सीधे ऋषि के पास पहुँची और उसे उन्हें सौंप दिया। ऋषि ने उस बाल की जाँच की और पुष्टि की कि वह वास्तव में एक जीवित बाघ की मूँछ का ही बाल है। तत्पश्चात उन्होंने आश्चर्य व्यक्त करते हुए उससे पूछा, ''बेटी! भयानक बाघ की मूँछ का बाल तुम इतने साहस के साथ कैसे उखाड़कर ले आई?'' तब उसने जंगल जाने से लेकर, बाघ के प्रति धीरे-धीरे प्रेम दर्शाने, उसे अपने वश में करने और मूँछ का बाल अखाड़ने तक की पूरी घटना विस्तार से बताई। उसकी पूरी कहानी शांत होकर सुनने के बाद, ऋषि ने अचानक उस बाघ की मूँछ के बाल को पास में जल रही यज्ञ की अग्नि में डालकर भस्म कर दिया।

यह देखकर वह स्त्री अत्यंत स्तब्ध और आश्चर्यचकित हो गई। उसने घबराकर पूछा, ''ऋषिदेव! यह क्या? आपने ही तो कहा था कि बाघ की मूँछ लाने पर औषधि बनाएँगे? परंतु आपने तो उसे अग्नि में जला दिया।'' इस पर ऋषि ने मुस्कुराते हुए कहा, ''बेटी! जंगल के एक हिंसक बाघ का प्रेम प्राप्त करना क्या कोई आसान काम है? तुमने उस बाघ का प्रेम अपने धैर्य और कोमलता से जीत लिया, जो अत्यंत भयभीत करने वाला और मनुष्यों पर हमला करने वाले स्वभाव का होता है। जब तुम ऐसे जीव का दिल जीत सकती हो, तो क्या तुम उस पति का प्रेम प्राप्त नहीं कर सकती जो तुम पर ही विश्वास करके जीवन बिता रहा है? निश्चित रूप से तुम कर सकती हो। तुम्हें किसी औषधि की आवश्यकता नहीं है। जो धैर्य, स्नेह और अटूट प्रेम तुमने बाघ को दिखाया, वही अपने पति को भी दिखाओ। थोड़ा धैर्य रखो, तुम अपने प्रयास में अवश्य सफल होगी, ऐसा कहकर उन्होंने उसे आशीर्वाद देकर विदा किया।''

ऋषि के गहरे ज्ञान और उनके द्वारा बताए गए परम सत्य को समझकर वह स्त्री अत्यंत संतुष्ट और स्पष्ट मन के साथ अपने घर पहुँची। युद्ध से मानसिक रूप से प्रभावित अपने पति की इच्छा के अनुसार, वह उनसे अत्यधिक आदर, धैर्य और स्नेह के साथ व्यवहार करने लगी। उसके अटूट प्रेम और सेवा-भाव को देखकर, उसके पति का मानसिक तनाव और दुःख धीरे-धीरे समाप्त हो गया। वे उससे पुनः पहले की भाँति अत्यधिक प्रेम करने लगे। जहाँ मन में अलगाव नहीं होता, वहाँ प्रेम भी कभी अलग नहीं होता - यही संसार का शाश्वत सत्य है।

चित्रकथा

कलिपीड़ा निवारण के लिए...

तेलुगु मूल - 'कलारत्न' डॉ.के.रविचंद्रन
अनुवादक - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी
चित्रकार - श्री तुंबलि शिवाजी

राज्य को खो जाने के बाद, दमयंती को जंगल में छोड़कर, जब नलमहाराज अकेले जा रहे थे, तब उनको दावानल को व्याप्त होते हुए दिखाई दिया।

उसको, एक बड़ा साँप दावानल में फँसा हुआ दिखाई दिया।

कोई मुझे बचाओ! बचाओ!...

हे महाराज! तुमने मुझे जलने से बचाया। मैं सदा तुम्हारा ऋणी रहूँगा। तुम एक से दस तक की संख्या गिनते आगे चलो।

नल ने एकम्(एक), द्वे(दो), त्रिणी(तीन), चत्वारि(चार) कहते हुए दश(दस) की गिनती मुँह से निकाला।

तुरंत, उस साँप ने उसे डस लिया।

विष के चढ़ने के कारण नल का पूरा शरीर काला पड़ गया।

1

हे नागराज! यही है क्या आपकी मदद! मैं ने तुझे जलने से बचाया, तुम्हारी तरफ से यही प्रतिफल मिला क्या?

हे राजा! मैं कर्कोटक नागराज हूँ। मुझे मिलनेवाले मदद को मैं कभी नहीं भूलता। तुम अपने कर्म तथा कलिप्रभाव के वशीभूत होकर कष्ट झेल रहे हो। मैं ने इसलिए डसा कि ताकि कलि तुम्हें पीड़ा नहीं पहुँचाये।

‘दश’ के दो अर्थ हैं - दस तथा डसो, इसीलिए तुमसे ‘दश’ कहल्वाकर मैं ने तुम्हें डस लिया।

अब तुम्हारे पूरे शरीर में मेरा विष फैल गया है। तुम्हें अब कोई पहचान नहीं सकता। कुछ समय पश्चात् तुम जब चाहो, मेरा स्मरण करो, तब तेरे शरीर से पूरा विष निकल जायेगा और तुम्हें अपना असली रूप मिल जायेगा। लेकिन तब तक ‘ऋतुपर्ण’ राजा के पास रथसारथी के रूप में अपना काम चलाओ।

हे बाहुक! दमयंती का दोबारा स्वयंवर चल रहा है, मुझे वहाँ अभी जाना है।

राजमंदिर में अपनी संतान को देखकर, नल बहुत दुःखी हुए।

इतने में दमयंती वहाँ पहुँचकर...

हे नाथ! आपको यहाँ तक ले आने के लिए ही इस स्वयंवर को रचाया गया है।

हे नागराज! मेरा असली रूप मुझे प्रदान करो।

कर्कोटक के अनुग्रह से नल को अपना असली रूप मिल गया।

2

कर्कोकट के मनन से कभी कष्ट या पीड़ायें सताती नहीं है।

कर्कोटकस्य नागस्य दमयन्ताः नलस्य च।
ऋतुपर्णस्य राजर्षीः स्मरणं पाप नाशनम्।।

सर्वेजनाः सुखिनो भवन्तु।



तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।



प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।

2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।

3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।

4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।

5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।

6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।

7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।

8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।

9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।

10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।

11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।

12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम.....

लिंग/आयु....., चंदा नंबर.....

पता.....

.....

मोबाइल नं.....

क्विज-52

1) कौनसा नक्षत्र के दिन पुष्पयाग को मनाते है?

ज).....

2) कार्तिक शुद्ध चविति के दिन कौनसा पर्व मनाते हैं?

ज).....

3) तिरुपति, श्री कपिलेश्वर स्वामी मंदिर में विराजित देवी माँ का नाम क्या है?

ज).....

4) तिरुपति, श्री कपिलेश्वर स्वामी मंदिर में प्रसिद्ध जलपात का नाम क्या है?

ज).....

5) क्षीराब्धि द्वादशी के दिन किससे - किसको विवाह संपन्न करना है?

ज).....

6) नलमहाराज के पत्नी का नाम क्या है?

ज).....

7) दीपावली के समय किस देवी माँ का आराधन करता है?

ज).....

8) पद्मावती देवी के पती का नाम क्या है?

ज).....

9) दीपदान का विशिष्ट मास का नाम क्या है?

ज).....

10) यमराज के बहन का नाम क्या है?

ज).....

11) यम और यमुना के माता-पिता का नाम क्या है?

ज).....

12) भाई दूज पर्व कब मनाते है?

ज).....

13) सौभाग्यशाली महिलाएँ निर्जला उपवास से संपन्न करने वाले पर्व का नाम क्या है?

ज).....

14) माँ लक्ष्मी के पति का नाम क्या है?

ज).....

15) सत्यभामा के पति का नाम क्या है?

ज).....



बालविकास

बिंदी को जोड़िए

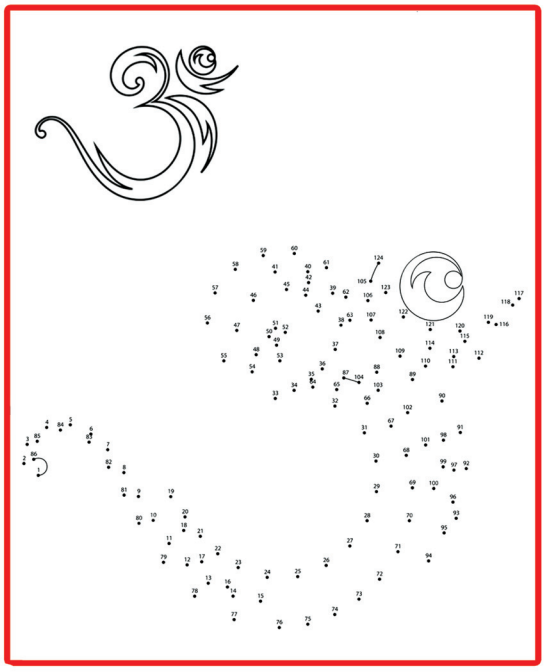

रंगों को भरिये क्या!

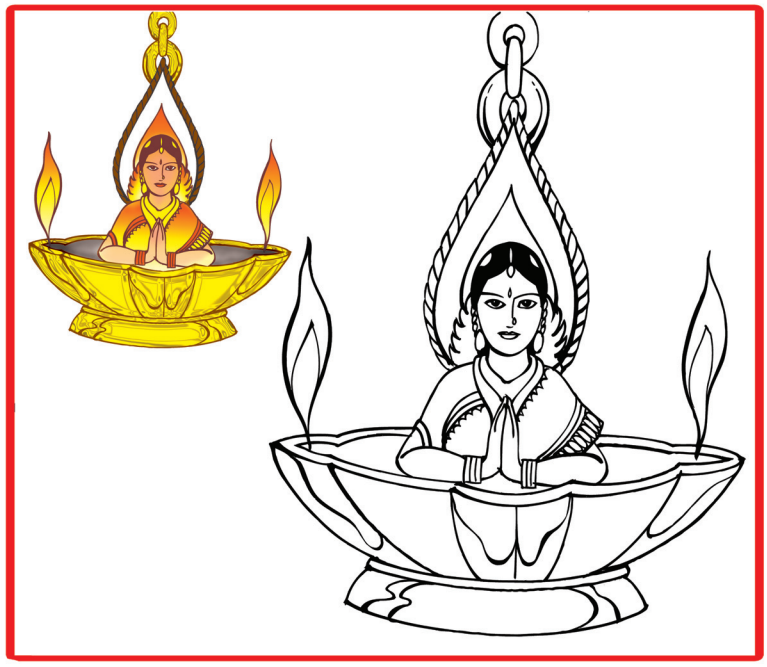

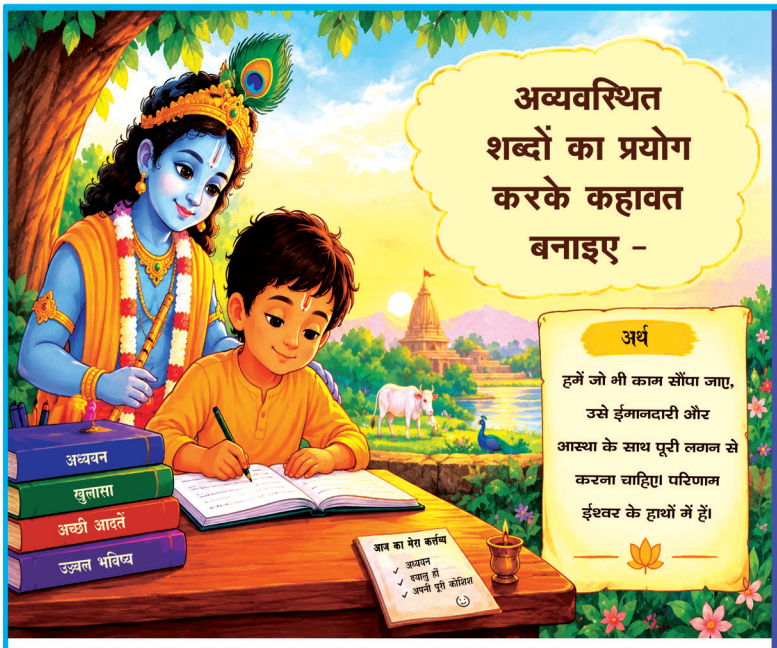

भगवान को

परिणाम छोड़ो

अपना कर्तव्य निभाओ

उत्तर : भगवान को परिणाम छोड़ो अपना कर्तव्य निभाओ

दीपावली संबंधित विषयों के बारे में जोड दीजिए।

1) नरकासुर

2) सत्यभामा

3) भगवान कृष्ण

4) लक्ष्मीदेवी

5) दीपावली

अ) संपदाओं की माँ

आ) दीप प्रकाशों का पर्व

इ) भगवान कृष्ण का पत्नी

ई) हारा हुआ नरकासुर

उ) राक्षस राजा

उत्तर - 1) उ 2) इ 3) ई 4) अ 5) आ

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)



चंदा भरने का पत्र

1. नाम : .....
   (अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) .....
   .....
   पिनकोड .....
   मोबाइल नं .....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड
   ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
   विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
   (अ) चंदा की संख्या :
   (आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
   मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) / भारतीय डाकघर (IPO) /
   ई.एम.ओ. (EMO) :
   दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)



धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने के लिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877

दूरभाष : 2264359,
2264543.

प्रधान संपादक : 2264363

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र - ॐ नमो वेंकटेशाय

https://ttdevasthanams.ap.gov.in
इस वेबसैट से भी सप्तगिरि पत्रिका चंदा भर सकते है।

Printed by Sri R.V.Vijayakumar, B.A.,B.Ed., and Published by Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D. P.G. Dip. in JMC on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D. P.G. Dip. in JMC








इस वार्षिक ब्रह्मोत्सव के अवसर पर तिरुमल माड़वीथियों में वाहन सेवा के सामने अपना नृत्य प्रदर्शन करने के लिए देश के कोने-कोने प्रांतों से बाल बच्चों, नृत्य बृंद, विविध कलाकार बृंद भी इस उत्सव में भाग लेकर अपना अद्भुत प्रदर्शन को प्रदर्शित किया। जीयंगार, वेदपंडित, अधिकारीगण, श्रीवारि सेवक, भक्तगण आदि भी अधिक संख्या में भाग लेकर इस ब्रह्मोत्सव को जयप्रद किया।






SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams Printing on 25-10-2026 and Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd. No.TRP/152/2024-2026 "LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026" Posting on 1st of every month.



नमामि नारायण पादपंकजं। करोमि नारायण पूजनं सदा।।
वदामि नारायण नाम निर्मलं। स्मरामि नारायण तत्त्वमव्ययं।।